जीवन-संघर्ष

उपन्यास

जगदीश प्रसाद मण्डल

पहिल संस्करण : 2010
दोसर संस्करण : 2013
तेसर संस्करण : 2016

समर्पण

मिथिलाक वृन्दावनसँ लऽ कऽ बालुक
ढेरपर बैसल फुलवाड़ी लगौनिहार
संगे नव विहान अननिहारकेँ

अक्षर संयोजक : उमेश मण्डल

1.

कातिकक अनहरिया। रौदियाह समए भेने जेठेक रौद जकाँ रौदो कड़गर होइत। तैपर सँ जनमारा उम्मस। जहिना छींच स्नानसँ देहपर पानिक टघार चलैत तहिना पसेना देहपर टघरैत। दस बजेक पछाइत बाध-बोन दिस आँखि नै उठौल जाइत, तेते झड़क! मुदा घरोमे चैन कहाँ? माथक पसेना नाकपर होइत टप-टप खसैत! देहक वस्त्र गन्हकैत! औल-बौल करैत सबहक मन..!

आठमे दिन दियारी छी तहूमे काली-पूजा करैक विचार सेहो सौंसे गौंआँ मिलि कऽ केलैन। दुनू अमावसिये दिन हएत। ओना अदौसँ दिवाली एक दिना पावैन होइत आएल अछि मुदा काली-पूजा धूम-धामसँ मनबैक विचार भेने, पाँचो दिन सभ अपन-अपन अँगनमे सेहो दीप जरबैक विचार कऽ लेलैन। आठमे दिन पावैनक दिन, तँए सात-दिनक पेसतरे घर-अँगनाक टाट-फरक सेरिएनाइ, छाउर-गोबरक ढेरी हटौनाइ, दुआर-दरबज्जासँ लऽ कऽ अपन-अपन घर लगक बाटकेँ छिलनाइ-बनौनाइ इत्यादि, कनीए काज अछि! तैपर सँ आन-आन गामसँ अबैत सड़को सभकेँ तँ अपना सीमान धरि मरम्मत करैए पड़त किने। गुण अछि जे रौदी भेने खेत-पथारमे काज नइए। जँ रहैत तँ सबहक लटैक जाइत!

गाममे काली-पूजाक पैघ आयोजनक विचार अछि तँए काजोक भरमार ऐछे। ओना, लोकक उत्साहे तेहेन अछि जे कोढ़िलो बोझसँ हल्लुक बुझि रहल अछि। मालो-जालक भार सभ स्त्रीगणेपर छोड़ि देलैन। सभ किछु होइतो आ रहितो मुँहक चुहचुहीमे सेब-तड़क छैन। कारण धानक खेतीमे गामक किसान बँटा गेल छैथ। ओना खेतक बुनाबट सेहो तेहेन अछि जे बँटाएब सोभाविके। अधिक ऊँच, मध्यम ऊँच, नीच आ अधिक नीच रूपमे गामक खेत अछि। जइसँ पानि आ रौदक एक-रंग असर नै होइए। जेकर सद्य: प्रभाव उपजापर पड़िते अछि। गामक किसानो बँटा गेल छैथ। जिनका मध्यम आ ऊँच खेत छैन हुनका-ले गरमा धानक खेती उपयोगी छैन। मुदा जिनकर खेत नीच आ अधिक नीच छैन, जइमे शुरूक बर्खासँ अगहन-पूस धरि पानि जमल रहैए, ओइ खेत-ले अगहनीए धानक खेती उपयोगी अछि। ओना वैचारिक भेद सेहो अछि। अखनो गरमा धानकेँ अशुद्ध बूझल जाइए। जइसँ किछु गोरे विरोध स्वरूप कम उपजा खुशीसँ पबै छैथ।

आइ धरि बँसपुरामे ने कहियो कोनो होम-यज्ञ भेल आ ने कोनो तेहेन दसगरदा उत्सवे। जइसँ परोपट्टाक लोक बँसपुराबलाकेँ अधरमी सेहो बुझैए..। ओना, गाम मेहनती किसान-बोनिहारक छी। गाम भरिमे ने एक्कोटा कम्पनीक एजेंट अछि आ ने चोर-डकैत आ ने ठक-फुसियाह। मुदा तँए की बँसपुराबला धर्मक काज नै करै छैथ? बखूबी करै छैथ। साले-साले महावीरजी स्थानमे अष्टयामक संग रामनवमी मनैबते छैथ। समए नीक हौउ कि अधला मुदा उत्सवमे कोनो बाधा नै होइत, भलेँ नै पान तँ पानक डण्टियोसँ काज चलिते अछि। तेकर अतिरिक्तो बेकता-बेकती भनडारा, अगहनमे जनार, आसीनमे सलहेसक पूजा इत्यादि करिते छैथ।

रौदी सबहक मनकेँ हौंर रहल छैन मुदा तैयो मनमे नव उत्साह जगले छैन। भिनसरसँ लऽ कऽ खाइ-पीबै राति धरि सभ पूजेक कोनो-ने-कोनो काजो करैत, नै तँ पूजेक जुति-भाँतिक विचारमे लगल रहै छैथ। डिहवारो स्थानक चलती आबि गेल। स्थानक सौंसे आँगनकेँ चिक्कैन माटिसँ दुनू साँझ

नीपलो जाइए आ गामक पुतोहु आ ढेरबा बेटी-जाति सभ, कमसँ कम पाँचटा उचिती-विनती सेहो सुनैबते छैन। कुमारि भोजन तँ पावैन दिन हएत। मुदा अनेको तरहक सुगन्ध अगरबत्ती आ सरर-धुमनक माध्यमसँ पसैरते अछि। केना नै पसरत? पहिले-पहिल गाममे पाँच दिनक मेला लागत। रंग-बिरंगक दोकानमे रंग-बिरंगक वस्तुक बिकरी गाममे हएत। सभ अपन-अपन जिनगीक अनुरूप कीनबो करत...।

मेलाक प्रति लोकक मन एतेक उड़ि गेल अछि जे ने आन काज आ ने आन गप करैत नीक लगैत। घरक सोलहन्नी भार स्त्रीगणेपर पड़ि गेलैन। मुदा तरे-तर रोगक एकटा किड़ी फड़ि गेल। ओ किड़ी ई जे खिस्सकरक चलती आबि गेल। सुननिहारक कमीए नहि। बुढ़-बुढ़ानुससँ लऽ कऽ धिया-पुता धरि। खिस्सकरो रंग-बिरंगक, कियो कालीकेँ समैक गति बुझि बजैत तँ कियो महादेवक छातीपर पएर देब कहैत। जहिना अपन खेत छोड़ि किसान वसन्त-पंचमी दिन एक्के परतीकेँ बेरा-बेरी जोतैत तहिना कालियोक चर्च करैत।

अदौसँ दिवाली एकदिना पावैन होइत आएल अछि। संगे एक-लाटेमे गोधन पूजा, भरदुतिया, दवातक पूजा सेहो होइत आएल अछि। तैपर सँ पाँच दिनक काली पूजाक मेला सेहो हएत। गाममे गहगट मचि जाएत। बिना ब्लिचिंग पौडर छिटने पेशावक गन्ध मेटाएत? दोहरी पूजा भेने जेहने सबहक मनमे खुशी होइत तेहने काजक तबाही सेहो। एक-लखाइत दस-बारह दिन खटब असान नहि। के बिमार पड़त, केकरा रद-दस्त हेतै तेकर कोन ठेकान। तहूमे धिया-पुता अकड़-धकड़ खेबे करत। रोकने थोड़े मानत। तैपर सँ भरि राति नाचो-तमाशा देखबे करत। सोचिनहार सभकेँ तरे-तर सोगो होइत। तेतबे नहि, आरो सोग सभ एकाएकी मनमे अबैत जाइत। एक तँ ओहिना दिल्ली-कलकत्ता दुआरे भाए-बहिनक पावैन- भरदुतिया- रोगा गेल अछि, तैपर सँ गामक मेला। जँ पूजाक हकारो देल जाएत तँ के एहेन

अभागल हएत जे लक्ष्मी पूजा छोड़ि गाम औत? भलेँ ऊक पुरुखे फेड़त मुदा तम्मा तरमे दूबि-पाइ सिरा आगू तँ जनीजातिये रखै छैथ। ओ पुरुख केना करता? एहेन पावैन छोड़ब केते उचित हएत?

गामक मेला सबहक मनकेँ बिर्ड़ोक झोंक जकाँ उड़बैत। तँए नीक-अधलापर नजैर केकरो टिकबे ने करैत। तहिना कातिकक जरैया बोखार आ पेट-झर्ड़ीपर नजैर केकरो जेबे नै करैत। सभ उन्मत! सभ बेहाल! जहिना फगुआ दिन भाँग पीब गाममे नचैए तहिना सभ घरसँ गाम-धरिक लोक काजक पाछू नचैत। जहिना घरक ओलतीक पानि टघैर कऽ अँगनासँ निकलैत-निकलैत पानिक बेग बनि पोखैर पहुँच जाइत तहिना बेकती ससैर कऽ समाजमे मिलि रहल अछि।

गाममे काली-पूजा किए हएत? जे एते दिन नै भेल ओ ऐ सालसँ किए हएत? अनेरे खर्चाक उतड़ी गौंआँ गरदैनमे पहिरैले किएक तैयार भऽ गेल? तेकर कारण ई अछि जे बँसपुरासँ कोस भरि सटले सिसौनीमे पच्चीसो बर्खसँ बेसीए दिनसँ दुर्गा-पूजा होइत अबैए। चरिकोसीक लोक दुर्गा-पूजा देखए सिसौनी जाइ छैथ। गामेक नहि, आनो-आनो गामक स्त्रीगण दुर्गा-स्थानमे साँझो दिअ अबै छैथ। कुमारि भोजन सेहो करबै छैथ। कबुलाक छागर सेहो चढ़बै छैथ।

बलि-प्रदानमे सिसौनीक जोड़ा जिलामे नै अछि। दुर्गा-पूजा होइसँ एक महिना पहिनेसँ बकरी पोसनिहारक चलती आबि जाइ छइ। तहूमे एकरंगापर तँ डाक-डकौबैल भऽ जाइए। तेतबे नहि, पाठ केनिहार सभ सेहो अभ्यास करए लगैत। गाममे दुर्गा-पूजाक समए परीछाक समए बनि जाइत। जे बेसीठाम सम्पूट पाठ केलैन ओ डिस्टिंग्सनक संग फस्ट डिवीजन घोषित होइ छैथ। आमदनियोँ नीक आ डिपलोमो नमहर! ओना, केतबो कियो अभ्यास करैथ मुदा छन्ठे पंडीजी फस्ट करता, ई सबहक मन बीस सालक अनुभवसँ मानैत आएल छैन। हद छैथ ओहो। एक तँ ओहिना तेज बोली छैन तैपर सँ तेते स्पीडमे धड़ै छैथ जे चौपाइक पहिल शब्द आ अन्तिमो शब्द सुनि पाएब कि नहि! ओना किछु हौउ मुदा किनुआँ सर्टिफिकेट नै रखने

छैथ। मेहनत कऽ कऽ अनने छैथ।

ऐबेर सिसौनीक दुर्गा-स्थानमे एकटा घटना भेल। घटना ई भेल जे बँसपुराक एकटा अठारह-बीस बर्खक लड़की, जेकर पैछले साल बिआह भेल छेलै आ तीनियेँ मास सासुर बसल छल, केँ पूजा कमिटीक तीन गोरे फूसला कऽ भण्डार घर लऽ गेल। मेला-गनगनाइत। नाच-तमाशाक लोड-स्पीकर चरिकोसीक नीन उड़ौने। तीनू गोरे ओइ लड़कीक संग दुरबेवहार केलक। बेवश भऽ ओ लड़की सभ किछु बरदास केलक। चारि बजे भोरमे ओकरा सभ छोड़ि देलक। मेला भरि ओ किछु ने बाजल। मुँह-कान झाँपि मेलासँ निकैल सोझे गामक रस्ता धेलक। गामक सीमापर पहुँचते छाती चहैक गेलइ। छाती चहैकते हबो-ढकार भऽ कानए लगल...।

भिनसुरका कानब सुनि एक्के-दुइए गामक लोक घर-आँगनसँ निकैल रस्तापर आबि-आबि देखए लगल। टोल प्रवेश करिते एका-एकी लोक पुछए लगलै। अपन बीतल घटना सुनबए चाहैत मुदा बजले ने होइ...।

बेटीकेँ कनैत देख, बिनु किछु पुछने माए छाती पीट-पीट कनैत दुनू हाथे पँजिया कऽ पुछलक-

"की भेलौ, हम माए छियौ, हमरा नै कहमे तँ केकरा कहबीही।"

जेना-जेना माए बेटीक मुँहक बात सुनैत तेना-तेना देहमे आगि सुनगए लगलै। सुनैत-सुनैत बमैछ कऽ पतिकेँ कहलक-

"जहिना हमर बेटीक इज्जत सिसौनीबला लूटलक तहिना सिसौनीक दुर्गास्थानमे मनुखक बलि पड़त।"

कहि घरमे रखल झोलाएल फौरसा निकालि, साड़ी समेट कऽ बान्हि सिसौनीबला सभकेँ गरियबैत विदा भेल। पत्नीक काली रूप देख पति सेहो तौनीक मुरेठा बान्हि हरोथिया लाठी नेने गारि पढ़ैत बढ़ल। बताहि जकाँ माए चिकैर-चिकैर गरियेबो करैत आ देवी-दुर्गा लगा-लगा सरापबो करैत। जेते डेग आगू-मुहेँ बढ़ै तेते तामसो ऊपरे-मुहेँ चढ़ल जाइ। एमहर भुमहुरक आगि

जकाँ तरे-तर गौंओंक करेजमे आगि लहैर गेल। सभसँ पहिने सातो दियादी परिवारक पुरुख, स्त्रीगण सहित धियो-पुतो, जेकरा जएह सोझमे भेटलै, से सएह लऽ कऽ सिसौनीक रस्ता धेलक। दियाद-वादकेँ आगू बढ़ैत देख टोलोक आ जातियोक सभ विदा भेल। गाम दलमलित हुअ लगल। जेकरा जएह मनमे उठै से सएह जोर-जोरसँ बजैत सिसौनी दिस विदा भेल।

बुधियार लोक सबहक मन दड़कए लगल जे दुनू गामक बीच खून-खरापी हेबे करत। एकरा कियो नै रोकि सकैए। मुदा तैयो आगिमे जरैसँ रोकैक परियासमे किछु लोक आगू बढ़ि रस्ता रोकलक। कियो बात मानैले तैयारे नहि। दुनू परानी कुसुमलालकेँ माने लड़कीक माए-बापकेँ चारि-चारि गोरे पकैड़ कऽ रोकलक। कुसुमलाल तँ ठमैक गेल मुदा पवित्री मानैले तैयारे नहि। चरि-चरि हाथ कुदि चारू गोरेक हाथ छोड़ा-छोड़ा आगू बढ़ि बजैत-

“सभ दिनसँ पुरुख स्त्रीगणपर अतियाचार करैत आएल अछि आ अखनो करैए। ऐ अतियाचारकेँ के रोकत? पुरुख-पुरुख सभ एक छी। जहिना गाएसँ गाए नै पाल खाइत तहिना पुरुख बुते पपियाह पुरुखकेँ सिखौल हेतइ! आइ सिखा देबइ!”

जहिना भादवक वादलमे बिजलोको छिटकैत आ चारू भर अवाजो होइत, तहिना हँसेरीक बीचसँ रंग-बिरंगक बात अकासमे उड़ए लगल-

“सिसौनीमे आगि लगा लंका जकाँ जरा देब!”

“इज्जत-आबरू लूटि, गाममे आगि लगा देब!”

“चौराहापर अपराधीकेँ आनि मुँहपर थूक फेक देहमे आगि लगा देब!”

“सिसौनीक बहु-बेटीकेँ पकैड़ लऽ आएब!”

क्रोधक चिनगारी उड़ि-उड़ि फुलझड़ी जकाँ अकासमे चमकए लगल। मुदा ई सभ विचार बेकता-बेकती होइत सामूहिक नहि। ने कियो केकरो बात सुनैले तैयार आ ने अपन मुँह रोकैले। मुदा तैयो बुधियार सभ रस्ता छोड़लैन नहि। घरमे लगल आगि मिझबैमे हाथ-पएर झड़ैकते छइ।

गाममे सभसँ बेसी उमेरक मनधन बाबा। जहिना नब्बे माघक जाड़ कटने छैथ, तहिना अनेको झाँट, पाथर, शीतलहरी, बिहाड़ि आ भुमकम

सेहो देख-भोगि चुकल छैथ। गामक लोकक़ैं एकमुहरी देख बाँसक फराठी नेने टुघरल-टुघरल मनधनो बाबा पहुँचला। पाछुएसँ देखलखिन तँ मन मानि गेलैन जे सिसौनी आ बँसपुराक बीच मारि हेबे करत। ब्रह्माक बापो नै बँचा सकै छैथ। केमहर के मरत, केतेक हाँड़-पाँजर टुटत, तेकर कोनो ठेकान नै रहत..!

विचारैत-विचारैत दुनू आँखिसँ नोरक टघार चलए लगलैन। छाती छहों-छीत भऽ गेलैन। बुकौर लागि गेलैन। देहक हूबा टुटि गेलैन। बोम फाड़ि कानए लगला। गंगोत्रीक गंगा जकाँ दुनू आँखिसँ अनघोल करैत अश्रु अर्ड़ाहट मारैत मुँहक बोल आ थर-थर कँपैत छातीसँ बेकाबू मनधन बाबा भऽ गेला। जहिना कोसीक धारक बीच मोइनमे पाछुक पानिक धारा आबि घुमए लगैत तहिना मनधनक विचार घुमए लगलैन। हूबा करि कऽ उठि आगू-मुहेँ ससरए लगला। आगू पहुँच रस्तापर फराठीसँ चेन्ह दैत पड़ि रहला। मन थिरे ने होइन। करवनो आँखिक सोझमे दू गामकेँ नष्ट होइत देखैथ तँ कखनो पुश्त-पुश्तानिक दुश्मनी सेहो होइत देखैथ! मन पड़लैन जुड़शीतल पावैनक घटना। एकटा नढ़ियाक खातीर बेला आ मैनही गामक शिकार खेलनिहारक बीच मारि भेल। धमगज्जर मारि। परिस्थितियो अनुकूले पड़लै। पावैन मनबए सभ लाठी, सोहत, तीर-धनुष लऽ लऽ शिकार खेलए गेले रहए। ने लोकक कमी आ ने मारि करैक वस्तुक। मुद्दो तेहने भारी, एकटा मुइल नढ़िया। मुदा प्रतिष्ठाक प्रश्न तँ गामक रहबे करइ। अही प्रतिष्ठा लऽ कऽ केतेको लोकक कपार फूटल, केतेकोकेँ हाथ-पएर टुटल आ दुनू दिस एक-एकटा खूनो भेल। कियो केकरो देखैबला नै रहल। जे जेतइ से तेतइ कुहरैत रहए। केकरा के उठा कऽ लऽ जाइत आ इलाज करबैत। हो-ने-हो तहिना कहीं आइयो ने हुअए!

फेर, मनधन बाबाक मनमे उठलैन जे सभकेँ मनाही करी मुदा सुनत के? विचित्र स्थितमे मन ओनाए लगलैन। आँखि उठबैथ तँ देखथिन जे जे

स्त्रीगण सभदिन सोझमे मुड़ी नै उठबै छल, आइ ओहो सभ बताहि जकाँ साड़ीक भरकौंच बन्हने लाठी फरका रहली अछि! सबहक मन मारियेपर टँगल छै! केना उतरत?

मुदा तरे-तर खुशियो होइत रहैन जे नीक वस्तुक कीमतो बेसी होइए। गुन-धुनमे फँसल मनधन बाबाक मन अपन दायित्वपर पड़लैन। मुदा ऐ हँसेरीक बोनमे दायित्वक मोजर के देत? मुदा तैयो एक भाग फराठीकेँ पकैड़ दोसर भाग उठा इशारासँ सभकेँ शान्त होइले कहलखिन। मुदा सभ अपने ताले, बेताल! गामक जेते कुकुर जेतए रहए ओ बान्हक निच्चाँ खेते-खेत भूकैत आगू पहुँच गेल। छह-मसुआ बच्चा सभ चारि बेर भुकै आ कनी काल सुसता लिअ...।

मनधन बाबाक मनमे उठलैन जे बँसपुराक लड़कीक संग जे दुरबेवहार सिसौनीबला लुच्चा सभ केलक ओ गामक इज्जतक संग जुड़ल सवाल अछि। इज्जत-ले जान देब पुरुखक काज छी। एकरा अधला के कहत? सभकेँ अप्पन-अप्पन इज्जत-आबरू बनबैले, बना कऽ निमाहैले, कटए-मरए पड़तै। से जँ नै रहत तँ करवन केकर इज्जत के लूटि लेत तेकर कोन ठेकान अछि। भदबरिया बेंग जकाँ साले-साल तेते लुच्चा-लम्पटक जन्म भऽ रहल अछि जे गामे-गाम सोहरल जाइए! मुदा गामक भीतर तँ एहेन-एहेन किरदानी सदिकाल होइते रहैए। तहन कहाँ कियो किछु बजैए? तैकाल साला सभ कहत जे धुर्र छौड़ा-छौड़ीक खेल छी...।

दुनू बात मनमे उठिते मनधन बाबाकेँ मुहसँ हँसी फुटए लगलैन। मुदा गामक लोकक रूखि हँसीकेँ दाबि देलकैन। सोचए लगला जे एक्के रंगक काज-ले एकठाम लोक कटए-मरए चाहैए आ दोसर ठाम धिया-पुताक[1] खेल बना उड़बैए! अजीब अछि लोकोक बुधि-विचार! जहिना सदिकाल एक पुरुख दोसर महिलापर नजैर उठबैत रहैए मुदा अपन पत्नीकेँ दोसरक संग बजैत देख आगि-बबुला भऽ किछु-सँ-किछु करैले तैयार भऽ जाइए तहिना ने

[1] छौड़ा-छौड़ीक

अखनो भऽ रहल अछि। जइ घटनाकेँ सामूहिक रूपे इज्जत बूझल जाइए ओइ इज्जतक रक्षो तँ समूहेकेँ करए पड़तै। जँ खेल बूझत तँ खेल जकाँ बुझह नै जँ इज्जत बूझत तँ इज्जत जकाँ सुरक्षित राखह। नै जँ गुल-गुल बुझि दुनू करत तँ इज्जत-आबरूक बाते करब छोड़ह...।

मन सक्कत हुअ लगलैन। रस्तापर फराठीक नोकसँ डाँरि दैत कहलखिन-

"ऐ डाँरिसँ जँ कियो एक्को डेग पएर बढ़ेबऽ तँ एतै पराण गमा देब। नै तँ अखन सभ शान्त भऽ जाह। नहाइयो-खाइ बेर भेल जाइए। भानसो-भात सबहक बन्ने छह। तँए अखन जाइ जाह। खा-पी कऽ चारि बजे बरहम स्थानक आगूमे बैस आगूक रस्ता बना लिहऽ।"

मनधन बाबाक विचार सभ मानि घरमुहाँ भेल। तत्खनात झंझट ठमैक गेल। मुदा मनक धधरा मिझाएल नहि। जहिना चेराक धधकैत आगिमे पानि ढारलासँ धधरा पझा जाइए मुदा ताउ रहबे करै छै, तहिना लोकोक मनक आगिमे भेल। छोट-छोट टुकड़ी बनि सभ विदा भेल। मुदा रस्तामे सभ क्रोध बोकैरते रहए। सभकेँ डोरियाइत घर दिस जाइत देख मनधन बाबाक मन थीर भेलैन। घर दिस घुमिते मनमे उठलैन जे जखन गामक लोकमे एते आगि लगल अछि तखन दुनू परानी कुसुमलालकेँ केते लगल हेतइ! से नइ तँ ओकरा ऐठाम जा बोल-भरोस दऽ अबिऐ।

अपन अँगनाक रस्ता छोड़ि मनधन बाबा कुसुमलालक ऐठाम पहुँचला। दुनू परानी कुसुमलाल दुखक अथाह समुद्रमे उगि-डुमि रहल अछि। दुनू निराश। आशाक केतौ दरस नहि। दुनूक चेहराक रंग मलीन भेल। मनमे बेर-बेर उठैत जे बिनु इज्जतक जिनगी जीब नै जीब दुनू बरबैर!

दुनू बेकतीकेँ देख मनधन बाबा चुपचाप मेह जकाँ डेढ़ियापर ठाढ़। ने कुसुमलाल किछु बजैत आ ने बाबा। मनमे होनि जे कुसुमलाल हमरे सोलहन्नी दोखी बुझैत हएत। जहिना प्रेमक अन्तिम सीढ़ी बिआह छी,

तहिना तँ क्रोधक खूनो छी। हो-ने-हो कोनो उझट बात कहि दिअए...।

फेर मनमे एलैन जे आएले तँ छी बोले-भरोस दइले। जीबठ बान्हि कहलखिन-

“बौआ कुसुम! हमरा आगू तूँ बच्चा छह। तोरासँ बहुत बेसी ऐ दुनियाँक चक्कर-भक्कर देखने छी। मनकेँ थीर करह। जे भऽ गेल ओ तँ नै घुमत। मुदा तइले की करी, केते करी, ई सभ बुझए पड़तह। एहेन तँ नै ने जे सभ कियो ओही लगल पराण गमा देब। तूँ दुनू गोरे तँ बापे-माए छहुन। दुखी भेनाइ उचिते छह। मुदा आइ की देखलहक? देखलहक किने जे समुच्चा गामक लोककेँ असीम दुख भेल छइ। ई विचार मनसँ हटाबह जे हम्मर इज्जत चलि गेल। गरीब लोकक सभसँ पैघ दुश्मन ओकर गरीबी छिऐ। गरीबी केवल अन्ने-पानि धरि नै होइए, जिनगीक सभ पहलु-ले होइए। गरीबीक बान्ह ओइ रूपे बन्हने अछि जइमे गारि-फज्झैतसँ लऽ कऽ धन-सम्पैत, माए-बहिनक इज्जत लुटै धरि अछि। तहन जँ कियो हँसी-खुशीसँ जीविये लइए वएह एक लाख।

बौआ, गरीबीक ताला लोहोक तालासँ नमहर आ सक्कत अछि। लोहाक तालामे एक्केटा मुँह आ दाँत होइ छै जइमे कुन्जी घुमौलासँ भक-दे खुजि जाइए। मुदा गरीबीक जे ताला अछि ओइमे अनेको मुँह आ अनेको दाँत अछि। एकटा खोलबह दोसर लगि जेतह। सोझे लगबे टा नै करतह, पहिलुकासँ केते गुना कस-कसा कऽ लगि जेतह। तँए, जहिना कोनो आमक गाछ साले-साल रौद, बर्खा, पानि-पाथर, बिहाड़ि जाड़ सहि नमहर भऽ फड़ैए आ ओ फड़ मनुखसँ लऽ कऽ अनेको जीव-जन्तु धरि बिलहैए तहिना मनुखोक जिनगी छी। जखने गरीब घरमे जन्म लेलह तखने बुझि जाहक जे आँखि देखैले नै कनैले अछि, गारि सुनैले कान अछि आ मारि खाइले देह अछि। गरीबक आँखिमे जेते इजोत बढ़ैए तेते नोरक समुद्र दिस जाइए आ जेते समुद्रक लग पहुँचैए तेते नोरक टघार अनवरतताक रूपमे बदलैए जइसँ अनवरत टघरैत रहैए! तोहर दुख समाजक दुख बनि गेल अछि। समाज ओहन कारखाना छी जइमे देवतासँ लऽ कऽ छुतहर धरि बनैए। तँए, ने

केकरो कहने केकरो इज्जत अबैए आ ने जाइए। लोककेँ अपने केने होइ छै आ गमौने जाइ छै...।"

मनधन बाबाक बात सुनैत-सुनैत पवित्री बोम फारि कानए लगली हुचैक-हुचैक बजली-

"बाबा, ई तँ गामक मेह छथिन तँए हिनकर बात मानि लेलिऐन। नै तँ आइ सिसौनीमे आगि लगौने बिना नै छोड़ितिऐ। जखनसँ बेटी आएल तखनसँ एक्को बेर मुँह उठा नै तकैए। कनैत-कनैत दुनू आँखि डोका जकाँ भऽ गेल छइ। सदिखन एक्केटा रट लगेने अछि जे जीविये कऽ की हएत। जखन इज्जत चलिये गेल तखन कोन मुँह समाजकेँ देखाएब।"

पवित्रीक बात सुनि मनधन बाबाक हृदए छँहोछीत भऽ गेलैन। आँखिमे नोर ढबढबा गेलैन। दुनू हाथसँ आँखि पोछि बजला-

"कनियाँ, जेकरा अहाँ इज्जत जाएब बुझै छिऐ ओ जाएब नै छी, जोर-जबरदस्ती छिऐ। जोर-जबरदस्ती मुँहक कहलासँ नै मेटाइ छइ। ओकरा शक्तिसँ रोकए पड़ै छइ। गरीबक बीच ओहन शक्ति अखन नै भेल अछि, जखन हएत स्वत: रूकि जाएत। अखन जोर-जबरदस्ती केनिहार बलगर अछि तँए सूझि-बूझिसँ चलए पड़त। इलाकामे कोन गाम एहेन अछि जइ गाममे एहेन-एहेन किरदानी नै होइ छइ। सभसँ पहिने गरीबकेँ अपना पैरपर ठाढ़ हुअ पड़तै। जखन ओ ठाढ़ भऽ संगठित हएत तखन शोषक संगे, जबरदस्ती केनिहारक संगे संघर्ष होएत। संघर्षोसँ समाज बदलैए समाज बदलने सभ किछु बदैल जाइए तँए कानू-खीजू नहि। समाजक संग पएर-मे-पएर मिला कऽ चलू।"

कहि विदा भऽ गेला। घर दिसक बाट तँ मनधन बाबा धऽ लेलैन मुदा डेग उठबे ने करैन। तैयो बलजोरी बढ़ला। फराठी हाथे कहुना-कहुना कऽ घरपर आबि गेला मुदा देहमे आगि लगले रहलैन। जइसँ विचार ओझरा गेलैन। धरती-पहाड़क दूरी देख सोचैथ जे कोनो आँगुर कटने अपने घा

हएत। भलेँ अखन धरि ई घटना छौड़ा-छौड़ीक खेल बूझल जाइ छल मुदा आइ सही रस्तापर आबए चाहैए। तँए घटनाकेँ रोकब उचित नै हएत।

फेर मनमे उठलैन जे दू गामक बीचक घटना छी। एक गामक रहैत तँ कनी हल्लुको रहैत मुदा दू गामक बीच एहेन घटनाकेँ केते नमहर मानल जाए? मुदा छोड़नाइयो तँ उचित नहि। अदौसँ पहाड़ी धार जकाँ निच्चाँ-मुहेँ बहैत आएल अछि, जेकरा रोकनाइयो जरूरी अछि। जँ से नइ हएत तँ वैश्वीकरणक बिर्ड़ोमे उड़ि कऽ अकास ठेक जाएत। मुदा जइ रूपे घटनाक जवाब बढ़ए चाहैए ओ तँ आरो विनाशक अछि। जहिना ऐ गामक लोक समाजिक प्रतिष्ठा बना कटै-मरैले तैयार अछि तहिना जँ कहीं सिसौनीबला सभ गामक प्रतिष्ठा बुझि ठाढ़ भऽ जाएत, तहन की हएत? ठाढ़ो होइक केते कारण भऽ सकैए। ओना सार्वजनिक स्थानक घटना होइतो गाम आबि लड़की बाजल। जेकरा गौंआँ मानि रहल अछि। मुदा सही घटना रहितो सिसौनीबला मानियेँ लेत सेहो जरूरी नै अछि। एक गाम दोसर गामपर बलजोरी केते काल कऽ सकैए?

मनधन बाबाकेँ कोनो बाटे नै सुझनि। दू गामक बीच तँ विचारेसँ रोकल जा सकैए। मुदा जँ एहेन घटना रोकल नै जाएत तँ सार्वजनिक स्थानक महत्ते केते दिन टिकत?

भुँइयेँमे दलानक ओसारपर कर बदैलते मनमे एलैन जे एहेन घटना समाजिक स्तरपर रोकब नीक हएत। मन असथिर भेलैन।

बेरुका बैसारमे जाइ आकि नहि? मुदा बाजल तँ हमहीं छी। फेर मनमे एलैन, चारि बजे सौंसे गौंआँकेँ बैस कऽ विचार करैले कहलिऐ आकि ई कहलिऐ जे तोरा सभकेँ विचार सुना देबह। दस मिलि करी काज, हारने-जीतने कोनो ने लाज। पाकल आम भेलौं, कखन छी कखन नै छी। ईहो कोनो जरूरी नै अछि जे हम्मर विचार सभकेँ सोहेबे करइ। जँ नै सोहेतै तहन तँ औरो मनमे दुख हएत। तहूमे मूलतः ई घटना महिलाक छी। जे पुरुख हजारो बर्खसँ एहेन अपराध करैत आएल अछि ओ सुहरदे-मुहेँ मानि लेत? आन गामक घटना कहीं गामे दिस ने चलि आबए। अखनो धरि समाजमे

एहेन किरदानीकेँ लोक हँसीए-चौल बुझैए।

फेर मनमे उठलैन, अपनो तँ आब बलजोरीए जीब रहल छी, नै तँ अपन बतारी कएकटा गाममे अछि। तँए कि समाजसँ हटि जाइ? जँ हटब तँ मुइला पछाइत डाहैले के औत? ओना, से देखबो करैले तँ नै आएब। अपनो परिवारमे देखै छी जे सिनेमा कलाकार आ खेलाड़ी सबहक कुल-खुटक नाओं जनैए आ अपना कुल-खुटक जनिते ने अछि। एहेन तँ गँरिबहू गाम अछि! केकरा कहबै, स्त्रीगणो सभ तेहेन-तेहेन आबि गेल अछि जे पुरुख सभकेँ गारि पढ़ि-पढ़ि कहैए जेहने छुतहर कुल-खुट रहतह तेहने ने चालि रहतह! आब कहू जे कुल-खुटक केन दोख छइ। नान्हि-नान्हिटा छौड़ा शिखर-पराग खाए लगल अछि, ऐमे केकर दोख? जीबैतमे एहेन-एहेन लीला देखै छी आ परोछ भेलापर हीरा सजौल मन्दिर बना देत? तैबीच पोती आबि कऽ टोकलकैन-

“खाइले चलू ने बाबा? नहेबै नहि?”

केचुआएल साँप जकाँ बाबा कहलखिन-

“चलै-फीड़ैक होश नै अछि अहीठाम नेने आबह। पहिने एक लोटा पानि नेने आबह। कनी मुँह-हाथ धोइ लेब।”

जहिना गदगरल मन रहने खाइक इच्छा नै होइत तहिना मनधनो बाबाकेँ बुझि पड़ैन। मुदा तैयो जी-जाँति कऽ खाए लगला। लाभर-जिभर चारि कौर खा लोटो भरि पानि पीब पोतीकेँ कहलखिन-

“अन्न नै धँसैए। लऽ जाह।”

हाथ मुँह धोइ मनधन बाबा चौकीपर ओंधरा गेला। मुदा जहिना ज्वर-एलासँ कछमछी अबैए तहिना चौकीपर एक करसँ दोसर कर घुमैथ। बेर टगल देख मनधन बाबा उठि कऽ फराठी हाथे बरहम स्थान दिस विदा भेला।

तीनियेँ बजेसँ एका-एकी लोक बरहम स्थान पहुँचए लगल। चारि

बजेसँ पहिनहि गामक लोक एकत्रित भऽ गेल। मुदा एकटा नव घटना सेहो भेल। ओ ई भेल जे गाममे आइ धरि कोनो पनचैती वा सार्वजनिक काजमे महिला भाग नै लइ छेली से आइ घरा-घरी सभ पहुँच गेली। ओना आइ धरि हुनका सभकेँ कहलो नै जाइ छेलैन। मुदा जखन सबहक बीच माने पुरुख-महिलाक बीच समए निर्धारित भेल तखन हुनको सभकेँ हौसला जगलैन। हौसला जगिते टाट-फरकक परदा तोड़ि घरसँ निकैल तीत-मीठक सुआद लइले निकलली। अखन धरि जे बुधि-विचारक गाछ माटिक तर बीज रूपमे पड़ल छेलैन ओ एकाएक अँकुर गेलैन। नजैर नचलैन तँ देखली जे अदौसँ आइ धरि महिला पुरुखक चारागाह छोड़ि आर किछु नै रहली! जबकि बुधि-विवेक आ हाथ-पएर तँ हमरो सभकेँ अछि। केवल नीन तोड़ि जगैक जरूरत अछि। चरैत-चरैत पुरुख महिलाक सम्पूर्ण जिनगीकेँ, पाण्डु रोगी जकाँ निरस बना देने अछि! बिआहसँ पूर्व शिक्षा-विहिन बच्चा जिनगी आ बिआहक पाँचे दिनक पछाइत समाजक कलंकित विधवाक जिनगी! जहिना सामूहिक हत्याराकेँ जहलमे यातना भेटैत तहिना महिलाक संग भेल अछि..! मुदा आइ बँसपुरामे नव सुरूजक उदय भेल।

बैसारमे पुरुख-नारी तँ पहुँचली मुदा एक-संग नै बैस फूट-फूट बैसली। एक भाग पुरुख आ दोसर भाग महिला। बिनु अनुशासक बैसार तँए दुनू बैसारमे सभ अपन-अपन पेटक बात बोकरए लगल जइसँ दुनू दिस अनधोल हुअ लगल। कियो केकरो बात सुनैले तैयार नहि। सभ अपने बजैमे बेहाल। मुदा पेटक बात सठिते सभ पोखैरक पानि जकाँ शान्त भऽ गेल।

कातमे बैसल मनधन बाबा समाजक रूखि चुपचाप अँकैत रहैथ। सभकेँ चानिपर पसेनाक टघार देखैथ। जइसँ बुझि पड़लैन जे भीतरक गरमी निकैल रहल छैन। समस्याकेँ दू ढंगसँ समाधान करब सोचि उठि कऽ ठाढ़ होइत मनधन बाबा बजला-

"अनकर घेघ देखैसँ पहिने अपन देखू। जँ से नइ देखब तँ ओहन दशा हएत जेहेन हँसि कऽ बजलासँ गम्भीर विचारक होइत। सभसँ जरूरी अछि गामक बीच जे एहेन-एहेन कुचालि सभ चलि रहल अछि, ओकरा बन्न करए

पड़त। जँ से नइ करब, तँ आइ ओहन लकड़ीमे आगि धऽ लेलक जे एक गामक कोन बात जे साइयो गामकेँ जरौत। औझुका सूमा जे देख रहल छी ओ पुरुखसँ कम महिलामे नै अछि। तँए दू बैसारकेँ एक बनाउ।”

एक बैसार सुनि दुनू दिस गल्ल-गुल्ल शुरू भेल। दू तरहक विचार दुनू दिस टकराए लगल। टकराहट देख केते पुरुख उठि कऽ विदा हुअ लगला। मुदा बाबाक बात महिला सभ मानि अपन बैसार उसारि पुरुखेक बैसारमे बैस चिकैर-चिकैर बाजए लगली-

“बाबा, अहाँक पीठपर हम सभ तैयार छी, उठि कऽ निर्णए दियौ।”

महिलाक अवाज सुनि बाबाकेँ भेलैन जे ई अवाज शरीरक नै शरीरी[2]क छी। हृदैसँ सभ कल्याण चाहि रहल छैथ। एकरा रोकब तँ असम्भव अछि मुदा मोड़ल जा सकैए...।

एक तँ बुढ़ाड़ी दोसर मनमे आगि लगल, मनधन बाबा थर-थर कँपैत फराठी बले उठि कऽ ठाढ़ होइत बजला-

“बाउ, हमरा आगू सभ बच्चे छह। जहन बच्चा बौआ आ बुच्ची बनैत तहियेसँ दूजा-भाव शुरू भऽ जाइए। मुदा हम सभकेँ बच्चे बुझै छिअ तँए कहै छिअ जे अपन कल्याणक बाट सभ पकैड़ चलह। अखन जइ घटना, जइ समस्या दुआरे सभ एकठाम भेल छी, ओ मात्र दू बेकतीक बीचक नै दू समाजक बीचक छी। दू बेकतीक बीचक जँ रहैत तँ ओकरा छोट मानल जाइत मुदा दू गामक समस्याकेँ छोट मानब गलत आँकब हएत। ई ओहन अछि जे एक-सँ-अनेक रूपमे पसैर जाएत। जहिना तूँ सभ कहै छहक जे सिसौनीमे आगि लगा देब, मारब, बेइज्जत करब तहिना तँ ओहो सभ करतह। तहूँ सभ मारबहक ओहो सभ मारतह। तहूँ कपार फोड़बहक ओहो सभ फोड़तह। अखन ने बुझि पड़ै छह जे सोलहन्नी हमहीं सभ मारबै

[2] आत्मा

आ ओ सभ मारि खाएत। मुदा से केतौ देखलहक हेन। दुनू दिसक लोक मारबो करैए आ मारियो खाइए।”

मनधन बाबाक विचार सुनि सभ मुड़ी डोला-डोला सोचए लगल। एक दोसर दिस तकबो करैत आ नजैर निच्चौं कऽ लइत। सबहक मनमे मारिक गम्भीरता नाचए लगल। मुदा तैयो मनक गरमी पूर्ण शान्त नै भेलइ। विचार गजपटाए लगलै। कखनो शान्तीक रस्ता मनमे जोर पकड़ै तँ कखनो उनैट कऽ मारि-दंगाक रस्ता पकैड़ लइ। जे चढ़ैत-उतरैत विचार मुँहक रूखिसँ साफ बुझि पड़इ। लोकक रूखि देख बाबा फेर ठाढ़ होइत बजला-

“गामेमे देखै छहक जे कनी हूबगर अछि ओ मुँहदुबराक संग केहेन बेवहार करैए? भलें अप्पन जातिये, दियादे किएक ने होइ..!”

बीचमे कनी काल चुप भऽ मनधन बाबा आगू बजला-

“भीतरसँ अप्पन गाम फोंक छह। देखते छहक जे सभ अपन-अपन नून-रोटीमे दिन-राति लगल रहैए। ने अपना पेटसँ छुट्टी होइ छै आ ने दोसराक आकि समाजक कोनो चिन्ता छइ। समाज की छिऐ से लोक बुझबे ने करैए। अपने पेटक खातिर बेइमानी-शैतानी, चोरी-डकैती सभ करैए। सभ मिलि समाजकेँ परिवार जकाँ ठाढ़ कऽ काज करी, से केकरो मनमे छैहे नहि। ओना सिसौनियो सएह अछि मुदा तैयो तँ अपना गामसँ कनी निस्सन ऐछे। कम-सँ-कम तँ सभ मिलि दुर्गा-पूजा तँ कइए लइए जखने दस-पनरह दिन सभ एकठाम भऽ एक काजक पाछू लगैए, तखने ने अपनामे गप-सप्प भेने साल भरिक छोट-छोट झगड़ा मेटाइए, जइसँ सामुहिक बल बढ़ै छइ। तँए समाजकेँ आगू बढ़बैले दसगरदा काज जरूरी अछि।

जाधैर लोकक मनमे दसनामा काजक प्रति झुकाउ नै हेतै ताधैर समाज आगू-मुहेँ केना ससरत? ऐ नजैरसँ देखबहक तँ बुझि पड़तह जे अपना गामसँ थोड़े आगू सिसौनी बढ़ल अछि। सिसौनियोसँ आगू पछबारि गाम ‘बरहरबा’ अछि। देखते छहक जे ओइ गाममे दुर्गो-पूजा होइए आ पढ़ै-लिखैले हाइयो स्कूल छइ। बरहरबोसँ अगुआएल दछिनबरिया गाम ‘कटहरबा’ अछि।

कटहरबामे हाइयो स्कूल छै, अस्पतालो छै आ सालमे एक-बेर सभ मिलि चारि दिनक मेला कालियो-पूजा लगा लइए। जइ गाममे जेते सार्वजनिक काज हएत ओ गाम ओते तेजीसँ आगू बढ़त। गाम अगुआइक माने संस्थे बनि जाएब आ पूजे हएब नै बल्कि आचार-विचार-बेवहार-चालि-ढालि सभ किछु बदलब होइत। जाधैर कोनो गाम पछुआएल रहैए ताधैर ओइ गाममे सदिखन राँड़ी-बेटखौकी, मारि-मरौबैल, हल्ला-फसाद होइते रहैए। जाधैर लोक झूठ-फूस बजैत रहत, छोट-छीन बात लऽ कऽ लड़ैत-झगड़ैत रहत, ताधैर ओकर समैक कोनो मोल नै हएत। जखने मूल्यहीन जिनगी चलैत रहत तखने श्रमक कोनो महत नै रहत। जे श्रम सार छी, मनुखक पूजी छी ओ धूरा-गर्दा जकाँ उड़ैत रहत! भाग्य-तकदीर बनौनिहार चानी कटैत रहत। जइसँ लोकक कमाइ लूटाइत रहत आ आँखिकेँ सदिकाल नोर दबने रहतै! जेकर आँखि नोरसँ झाँपल रहत ओ दुनियाकेँ केना देख सकत?”

मनधन बाबा बजिते रहैथ कि सुननिहारक बीच गल-गुल शुरू भेल। लोकक गल-गुलसँ मनधन बाबाकेँ दुख नै भेलैन, खुशीए भेलैन। मनमे उठलैन जे भरिसक लोकक परती बुधिमे जोत-कोर भऽ रहल छइ। नजैर खिरा-खिरा मरदो दिस आ जनीजातियो दिस देखए लगला। बैसले-बैसल जोगिन्दर जोरसँ बाजल-

“दुर्गा-पूजा तँ आब पौरुकाँ हएत मुदा कालीपूजा तँ लगिचाएल अछि। तँए हम सभ आइये संकल्प लऽ ली जे हमहूँ सभ काली-पूजा गाममे करब।”

जोगिन्दरक बातपर सभ थोपड़ी बजा समर्थन दऽ देलक। अही प्रतिक्रियाक फल छी गाममे काली-पूजा।

ओना रौदियाह समए भेने गामक किसानो आ बोनिहारोक दशा दयनीय अछि मुदा सिसौनीक घटना तेना उत्साहित कऽ देलक जे सभ बिसैर

गेल। उत्साहित भऽ बोनिहारो सभ एकावन-एकावन रूपैआ चन्दाक घोषणा कऽ देलक। बोनिहारक उत्साह किसानकेँ झकझोड़ि देलक।

प्रतिष्ठाक प्रश्न सामनेमे उठि गेलइ। तैपर सँ परदेसिया आरो रंग चढ़ा देलक। जेना एक दुखकेँ दबैले अनेको दबाइ आ पथ्य सामने आबि गेलइ। समाजक संग मिलि चलैक अछि, तँए बेकतीगत दुखकेँ दाबए पड़त। सार्वजनिक काजमे पाछुओ हटब उचित नहि। गामक बहु-बेटी आन गाम मेला देखए जाइत रहल, ओइ प्रतिष्ठाकेँ प्राप्त करब। सभसँ पैघ बात बदला लेबाक रस्ता बनि रहल अछि। हमरा गामक लोककेँ जँ आन गामक लोक बेइज्जत करत तँ ओहू गामक लोककेँ हमसभ करबै। जइसँ आन गामक बरबैरमे अपनो गाम औत। उत्साहित भऽ प्रेमलाल उठि कऽ ठाढ़ भऽ जोर-जोरसँ बाजए लगल-

“भाय लोकैन! अपना गामक भाए-बहिन आन गामक मेलामे जा बेइज्जत होइए। एकर की कारण छइ? कारण छै जे अपना गाममे कोनो तेहेन सार्वजनिक काजे ने होइए। जखने अपनो सभ तेहेन काज करब तँ अनेरे आन गाम बलाकेँ दहसैत हेतइ। वएह दहसैत गामकेँ उजागर करत, प्रतिष्ठित बनौत। गोसाँइ जी रामायणमे कहने छैथ, बिनु भय होइ न पीरिति।”

प्रेमलालक मुँह तँ बन्न भऽ गेल मुदा बजैले मन लुसफुसाइते रहलै। मुदा, आगूक बात मनमे एबे नै करै आ बजले बात दोहरौनाइ उचित नै बुझि, बैस रहल। प्रेमलालकेँ बैसते फेर गल-गुल हुअ लगल। गल-गुल एते बढ़ि गेलै जे जहिना सौजनियाँ भोजमे होइत तहिना भऽ गेल। गल-गुल देख अनुप उठि कऽ हाथक इशारासँ शान्त करैत गरमा कऽ बाजल-

“देखू, गल-गुल केने किछु ने हएत। सिसौनीबला सभकेँ एते गरमी किए चढ़ल रहै छै से बुझै छिऐ? ओ सभ दस हजार रूपैआ खर्च कऽ कऽ दुर्गा-पूजा कए लइए! तँए ओकरा सबहक गरमी हेट करैक अछि। तँए हम सभ पचास हजार रूपैआ काली-पूजामे खर्च करब। जँ सबैया-डेढ़ा खर्च कऽ पूजा करब तँ ओ सभ मद्दियो ने देत। तँए समधानि कऽ हरदा बजबैक

अछि।

अखने पूजा कमिटी बना लिअ। ओना अखन बीस-बाइस दिन काली-पूजाक अछि। मुदा अखनेसँ गाम-सँ-आन गाम धरि माहौल बनबैक अछि। पूजा समितिमे सभ टोल आ सभ जातिक सदस्य बनाउ। जँ सभ टोल आ सभ जातिक सदस्य नै बनाएब तँ अनेरे अखनेसँ अनोन-बिसनोन शुरू भऽ जाएत। तेतबे नहि, सभ जातिक सदस्य बनौने काजो असान हएत। सभ अपन-अपन लूरि-बुधिसँ सहयोग करत।"

अनुपक विचारसँ सभ सहमति भेला। समिति बनए लगल। सभ मिला एक्केस गोरेक समिति बनल जइमे पाँच महिला। एक्कैसो गोरे उठि कऽ ठाढ़ भेला तँ एक दिव्य स्वरूप चमकल। सभ नौजवान। एक्कैसोक मनमे खुशी जे समाजिक क्षेत्रमे आगू बढ़ि रहल छी। समितिक सदस्य एक भाग आ गौंआँ दोसर भागमे बैस विचार आगू बढ़ौलैन। समितिक संचालन-ले पदाधिकारीक जरूरत होइत। कमसँ कम अध्यक्ष, उपाध्यक्ष आ कोषाध्यक्षक जरूरत हेबे करैत। मुदा अध्यक्ष के बनत? गम्भीर प्रश्न। सभ सबहक मुँह देखए लगला।

केकरो अनुभव नहि। ओना समितिक अधिकांश सदस्यकेँ अध्यक्ष बनैक इच्छा मुदा अनुभव नै रहने डरो होइत। सभकेँ चुप देख रघुनाथ अपन पितियौत भाय देवनाथक नाओं अध्यक्ष-ले प्रस्ताव केलक।

देवनाथक परिवार गाम भरिमे जातियो आ पूजियोमे सभसँ बीस। देवनाथक नाओं सुनि अधिकांश सदस्य धकमकए लगल। विरोधमे दोसर किनको नाओं नै सुनि मंगल अपन नामक प्रस्ताव अपने केलैन।

दू गोरेक नाओं अबिते बैसारमे गुन-गुनी शुरू भेल। धनो आ जातियोमे मंगल देवनाथसँ पछुआएल। मुदा जेहने बजैमे फरकोर तेहने इमानदार आ बी.ए. पास सेहो। जे सभ बुझैत।

देवनाथ आ मंगल संगे-संग बी.ए. पास केने रहए। ओना पढ़ैमे मंगल

चन्सगर मुदा रिजल्ट देवनाथक नीक रहलै। तेकर कारण रहै जे देवनाथ धुड़फन्दा शुरूहेसँ रहए।

मंगलक नाओं सुनि देवनाथो आ रघुनाथो आँखिक इशारासँ गप-सप्प करए लगल। कनीए कालक पछाइत मंगलकेँ पलौसी दैत रघुनाथ बाजल-

“भैया, हमरा लिये जेहने अहाँ तेहने भैया छैथ। अहूँ दुनू गोरे संगीए छी। आग्रह करब जे देवनाथ भैयाकेँ अध्यक्ष आ अहाँ उपाध्यक्ष बनि काज चलाबी।”

मंगलक मनमे केवल पूजे समिति चलाएब नहि, समाजकेँ आगू बढ़बैक विचार सेहो। बच्चेसँ देवनाथक चालि-ढालि मंगल देखैत आएल। मुदा समाज तँ पोखैरक पानि सदृश होइए। जइमे हवा-बिहाड़िक लहैर सेहो उठैए आ लगले असथिर भऽ शान्त सेहो भऽ जाइए। मंगलक मनमे देवनाथक प्रति एकटा आरो बात घुरियाइत रहैन। ओ ई जे एक दिन, करीब चारि साल पहिने एकटा गामेक लड़कीक संग छेड़खानी करैत देवनाथकेँ मंगल पकड़ने छला। हाटसँ अबैत मंगलकेँ देख ओ लड़की फफैक-फफैक कानए लगल।

साइकिल ठाढ़ कऽ सभ बात सुनलैन। तामसे बेकाबू भऽ गेला। देवनाथकेँ बिनु किछु पुछनहि चारि-पाँच चाट मुँहमे लगा देलखिन। क्रोधो कमलैन। मुदा डरसँ देवनाथ थर-थर काँपए लगल। मंगल देवनाथकेँ कहलखिन-

“बच्चा, अखन धरिक संगी छेलेँ तँए छोड़ि दइ छियौ। नै तँ समाजक बेटीक संग एहेन बेवहार करैबलाकेँ जिनगी भरिक पाठ पढ़ा दैतिऐ।”

दुनू हाथ जोड़ि देवनाथ, न्यायालयक अपराधी जकाँ मंगलक आगूमे ठाढ़ भऽ गेला। विचित्र स्थितमे मंगल उलैझ गेला। मनमे क्रोध आ दयाक बीच घिच्चम-घिच्चा हुअ लगलैन। कखनो दया दिस मन ससरैत रहैन तँ कखनो क्रोध दिस बढ़ि जाइत रहैन। मनकेँ असथिर करैत कहलखिन-

“अखन धरिक संगी होइक नाते छोड़ि रहल छियौ। नै... तँ...। कान पकैड़ कऽ बाज जे एहेन गलती फेर केकरो संग नै करब! जाधैर कोनो

लड़कीकेँ बिआह-दुरागमन नै होइत ताधैर माए-बापक सन्तान बूझल जाइत मुदा सासुर जाइते गामवाली माने गामक बेटी बनि जाइए।"

यएह बात मंगलक मनमे घुरियाइत रहैन।

रघुनाथक बात सुनि मंगल जवाब देलखिन-

"बौआ रघू, दसगरदा काजक शुरुआत गाममे भऽ रहल अछि। मुदा समाज तँ टुकड़ी-टुकड़ी भऽ छिड़ियाएल अछि। तँए जरूरत अछि जे एक-एक टुकड़ीकेँ ओरिया-ओरिया पकैड़ दोसरमे सटबैक अछि। से जाधैर नै हएत ताधैर कोनो सार्वजनिक काज सफल हएब सन्दिग्ध बनल रहत। खण्डित भऽ जाएत। देखते छहक जे कोनो भोज होइ छै तँ दस कोस, पनरह कोससँ पंच आबि-आबि खाइए मुदा भोजैतक घर लगहक परिवार भूखले रहैए। एहेन अन्यायी समाजमे न्याय कहिया औत आ के आनत?

अखन जे समाजिक ढाँचा बनि ठाढ़ अछि, ओ गँरि-मुराह अछि। जहिना कोनो बोझ गँरि-मुराह भेने करवन माथपर सँ खसि छिड़िया जाएत तेकर कोनो ठेकान नहि, तहिना समाजोक अछि। तँए बोझे जकाँ समतुल्यपर बान्ह पड़ैक चाही। जइसँ कहियो छिड़ियेबाक शंका नै रहत। दसनामा काजमे समाजक बच्चा-बच्चाकेँ बरबैरक हिस्सा भेटक चाही। मुइल-टुटल कियो किएक ने हुअए मुदा ओकरा मनसँ ई विचार निकैल जेबा चाही जे ई काज हमर नै फल्लाँक छिऐ। हम सोझे करैबला छी करबैबला नहि। केकरो बाप-पुरखा हर जोतैत आएल अछि, अखनो जोतैए आ आगुओ जोतैत रहत। जँ से नइ जोतत तँ खेती केना हएत? मुदा ओहो समाजक ओहने अंग छी जहिना पढ़ि-लिखि कियो करैए।

अखन गामक सभ बैसल छी तँए पूजा-प्रकरणक सभ निर्णए सबहक बीच भऽ जाए। सिसौनीमे अखनो देखै छी जे दुर्गास्थानमे सबहक पहुँच नै अछि।"

मंगलक बात सुनि सभ स्तब्ध भऽ गेला। मनमे उठा-पटक हुअ

लगलैन। ओना बहुतोक बुधिमे सभ बात अँटबो ने कएल मुदा जेतबे अँटल ओ आगिक लुत्ती जकाँ चमकए लगल। बेवहारिक जिनगी आ वास्तविक जिनगीक बीचक दूरी बहुत बेसी भऽ गेल अछि। बेवहारिक जिनगीकेँ वास्तविक जिनगी दिस झुकौने चलए पड़त। जँ से नइ हएत तँ सदिखन चलैक रस्ता गजपट होइते रहत। परोछमे उचित बात बजनिहारक कमी नै मुदा सोझहा-सोझही बजनिहार कियो नहि! तेकरो केतेको कारण अछि...।

गुन-गुन, फूस-फूस होइत देख मंगल बुझि गेला। मनमे उठलैन बुद्धदेवक ओ बात जइमे कहने छैथ जे वीणाक तारकेँ ओते ने कसि दिऐ जे टुटि जाए, आ ने ओते ढीले रहए दिऐ जे अवाजे ने निकलै...।

मंगल बजला-

“अध्यक्ष पदसँ हम अपन नाओं आपस लइ छी। देवनाथे अध्यक्ष होथि। मुदा अखनसँ लऽ कऽ जखन तक पूजाक प्रकरण चलैत रहत ताधैर सभ काजक निर्णए, समितिक बीच हुअए।”

मंगलक बात सुनि देवनाथ सेहो ठाढ़ होइत बजला-

“जिनगीमे पहिल-पहिल दिन समाजक काज करैक मौका भेट रहल अछि तँए मनमे असीम खुशी अछि। सभ तँ अनाड़ीए छी, जइसँ बिनु बुझलो केतेक गलती भऽ सकैए। मुदा ओइ सभकेँ भुल-चुक मानि सम्हारैक उपाय हेबा चाही। अखन सभ कियो छी तँए मुख्य-मुख्य काजक निर्णए अखने भऽ जाए। ओना अखन दिनगर अछि मुदा सबहक नजैरमे रहब बढ़ियाँ रहत।”

देवनाथक विचार सुनि सबहक मुहसँ निकलल-

“बहुत बढ़ियाँ, बहुत बढ़ियाँ।” कहि समर्थन देलक।

निर्णए भेल-

(१) गामेक कारीगर माने मूर्ति बनौनिहार मूर्ति बनबए। ओना एक-पर-एक कारीगर दुनियाँमे अछि मुदा पूजाक मूर्तिमे कला नै देवी-देवताक स्वरूप देखल जाइए। दोसर जँ हम अपन बनौल मूर्तिकेँ अपने अधला कहब तँ गामक कलाकार आगू केना ससरत? तँए जे गामक कला अछि ओकरा

सभ मिलि प्रोत्साहित करी।

(२) काली मण्डप गामेक घरहटिया बनबैथ। जिनका घर बनबैक लूरि छैन ओ मण्डप किए ने बना सकै छैथ। संगे ईहो हएत जे गामक अधिक-सँ-अधिक लोकक सहयोग सेहो होएत।

(३) मनोरंजन-ले गामोक कलाकारकेँ अवसर भेटैन। संगे बाहरोक ओहन-ओहन तमाशा आनल जाए जेहेन ऐ परोपट्टामे नै आएल हुअए।

(४) पूजा-ले, परम्परासँ अबैत ओहनो पुजेगरीकेँ अवसर भेटैन जे पूजाक प्रेमी छैथ।

(५) गामक जेते गोरे काज करैथ ओइमे नीक केनिहारकेँ पुरस्कृत आ अधला केनिहारकेँ आगू मौका नै देल जाइन।

पाँचो निर्णए सर्वसम्मतिसँ भऽ गेल। बैसार उसैर गेल।

खा-पीब कऽ मंगल सुतैले बिछान बिछबैत रहैथ। रातिक एगारह बजैत रहइ। सतरंजी बिछा दुनू हाथे जाजीम झारलखिन। तैबीच जोगिन्दर मंगलसँ भेँट करए आएल। जाजीमक अवाज सुनि जोगिन्दर घबड़ा गेल। मनमे भेलै जे किम्हरौ थ्री-नट्टा ने तँ चलल! हियासि-हियासि चारूकात ताकए लगल। मुदा केकरो सुनि-गुनि नै पाबि मन असथिर भेलइ। असथिर होइते मंगलकेँ सोर पाड़लक।

कोठरीएसँ मंगल अवाज दैत बहरेला। बाहर अबिते जोगिन्दरकेँ देख बजला-

“आबह। आबह भाय। एती रातिकेँ किए एलह?”

दुनू गोरे ओसारक चौकीपर बैस गप-सप्प करए लगला। जोगिन्दर कहलकैन-

“भाय, आइ तक तोरा एना भऽ कऽ नै चिन्हने छेलिअ। मुदा तोहर औझुका विचार सुनि छाती बारह हाथक भऽ गेल। भाँइमे कियो दादा

हुअए!"

जोगिन्दरक बात सुनि मंगल बजला-

"भाय, बहुत राति भऽ गेल अछि, भोरे उठैओक अछि। किए एलह से कहऽ।"

"अखन अबैक खास कारण अछि, तँए निचेन बुझि एलौं। तहूँ तँ देखते छहक जे अखन धरि हम गाममे दहलाइते छी। ने रहैक बढ़ियाँ ठर अछि आ ने जीबैक कोनो आश। मुदा...।"

"मुदा की?"

"मुदा यएह जे करोड़पति रहितो कोनो मोजर गाममे नै अछि।"

करोड़पति सुनि मंगल चौंकैत बजला-

"करोड़ केतेक होइ छै, से बुझै छहक?"

"हँ। सौ लाख।"

"एते रूपैआ अनलह केतएसँ?"

"ऐ बातकेँ छोड़ह। जहियेसँ दिल्ली नोकरी करए गेलौं तहियेसँ रूपैआक ढेरी लग पहुँच गेलौं। शुरूमे जे बोरामे कसल रूपैआ देखिऐ तँ हुअए जे छपुआ कागत छिऐ। मुदा कनी दिन रहलापर रूपैआ हथियबैक लूरि भऽ गेल। अखन, दिन भरिमे लाख रूपैआ हौंसतब कोनो भारी कहाँ बुझै छिऐ! मुदा ओइ काजसँ मन उचैट गेल। आब एक्केटा इच्छा अछि जे मनुख बनि गाममे रही।"

"हमरा की कहए चाहै छह?"

"अखन तँ सभ पूजामे ओझराइल छी। पूजाक पछाइत मदैत कऽ दिहऽ। एक लाख रूपैआ अनने छी। अपन जे आदमी अछि जदी ओकरा जरूरी होइ तँ बिना सुइदेक सम्हारि देबइ। खाली मूरक-मूर घुमा देत। संगे तोरो कहै छिअ जे रूपैआ दुआरे पूजामे कोनो कमी नै होइ।"

जोगिन्दरक बात सुनि मंगलक मनमे बिर्ड़ो उठि गेलैन। एक मन कहैन जे रूपैआ दुआरे काज पछुआ जाइए। से आब नै हएत। तँ फेर सोचैथ जे डकैत-तकैतक भाँजमे ने तँ पड़ल जाइ छी! जोगिन्दरकेँ अखन धरि एकटा

साधारण आदमी बुझि परदेसिया बुझै छेलौं। परदेसमे की करै छेलै से तँ नै बुझै छेलौं। मुदा खतरनाक आदमी बुझि पड़ैए। एसमगलर छी आकि हवालाक धन्धा करैए। तत्-मत् करैत मंगल पुछलक-

"एते रूपैआ केना भेलह?"

मंगलक प्रश्न सुनि जोगिन्दर चौकन्ना भऽ चारू दिस तकलक। केकरो नै देख घुन-घुना कऽ बाजल-

"भाय, जैठीम नोकरी करै छेलौं ओ बड़ भारी कारोबारी अछि। हजारो नोकर-चाकर छइ। देखौआ कारोबारक संग चोरनुकबा कारोबार सेहो करैए। आन-आन देशक रूपैआ भजबैए। कोन-कोन देशक लोक कोन-कोन रंगक रूपैआ भजबैए से कि सभकेँ चिन्हबो करै छेलिऐ। मुदा हमरापर सेठवाकेँ खूम बिसवास छइ। हरदम अपने लग रखैए। टहल-टिकोरासँ लऽ कऽ चाह-पान धरि आनि-आनि दइ छेलिऐ। निशिभाग रातिमे एक आदमी गाड़ीपर अबै आ भरि दिन जेते बाहरी रूपैआ भेल रहै छै ओ सभ लऽ जाइ छइ। आपस किछु ने करै छइ। खाली पास-बुकपर रूपैआ चढ़ा दइ छइ। सेठबाकेँ जखन जेते रूपैआक जरूरत होइ, हमहीं बैंकसँ आनि-आनि दइ छेलिऐ।"

जोगिन्दरक बात सुनि मंगलक भक्क जेना खूजि गेलैन। बिच्चेमे बजला-

"दिल्ली सनक शहरमे सी.आइ.डी. आ पुलिस किछु ने कहै छइ?"

मुस्की दैत जोगिन्दर उत्तर देलक-

"सभकेँ महिना बान्हल छइ।"

जोगिन्दरक बात सुनिते मंगलक मनकेँ, निराशाक कारी मेघ टोपर बान्हि जेना चारू-भरसँ घेर लेलकैन, तहिना हतोत्साह भऽ गेला। मनमे उठलैन, केकरापर करब सिंगार पिया मोरा आन्हर रे..! जइ देशक शासन कमजोर रहत ओइ देशक सुरक्षा भगवान छोड़ि के कऽ सकैए..!

मंगल भीतरे-भीतर डरा गेला। मुदा मनकेँ असथिर करैत पुछलखिन-

“तूँ ओही सेठक संग रहै छह की..?”

जोगिन्दर-

“दस बरख ओइ सेठबा ऐठीन रहि सभ तरी-घटी देख लेलिऐ। ओकरा ऐठीनसँ हटैक मन भऽ गेल। मुदा नोकरी नै छोड़लौं। कहलिऐ, माए अस्सक अछि तँए किछु अगुरवारो रूपैआ दिअ। जे इलाज कराएब। भरि दिन दारूए पीऐत रहैए। सारकेँ लगबो करै छै कि नहि। एते भारी कारोबार केना सम्हारि लइए। मनमे उठल जे जहिना ई सार दुनियाकेँ ठकि धन जमा केने अछि तहिना हमहूँ किए ने एकरे ठकी। दबाइक दोकानसँ एकटा कड़गर निशाँबला दबाइ कीनि आनि दारूक बोतलमे फेँट देलिऐ। आठ बजे साँझमे जखन दारू मंगलक तँ वएह बोतल दऽ देलिऐ आ कहलिऐ जे हमरा गाम दिसक गाड़ी चारि बजे भोरमे अछि तँए रातियेमे चलि जाएब। कहलक, बड़बढ़ियाँ। दारू पीलक।

हम ससैर कऽ मलिकाइन लग जा कऽ कहलिऐ जे गाम जाएब। फेर ओइठीनसँ थानापर चलि गेलौं। सभकेँ कहि देलिऐ जे आइ गाम जाएब। सभ चिन्हरबे रहए। घुमि कऽ एलौं तँ देखलिऐ जे सेठबा बेमत् अछि। खाइले गेलौं। खेलौं। खा कऽ आबि सिरमा तरसँ कुन्जी निकालि रूपैआबला कोठरी खोललौं। बाप रे! सौंसे कोठरी रूपैएसँ भरल। मझोलका बैगमे रूपैआ भरि कोठरी बन्न कऽ कुन्जी रखि देलिऐ। अपन जे नेपलिया रैक्सीनबला बैग रहए ओइमे रूपैओक बैग आ कपड़ो-लत्ता लेलौं। बारह बजे रातिमे जखन रोड खाली भेल तखन एकटा टेम्पूसँ ममियौत भाय लग चलि गेलौं। भैया बड़ होशगर छैथ। कहलैन जे जहन रूपैआ हाथ आबि गेल तहन चलि केना जाएत। वएह रूपैआ छी।”

जोगिन्दरक बात सुनि मंगल बजला-

“अपन की अभियन्तर छह?”

“मनमे अछि जे दस कट्ठा घराड़ी जोकर जमीन भऽ जाए आ पाँच बीघा घनहर। दसो कट्ठा घराड़ीकेँ छहरदेवालीसँ घेर दिऐ। बीचमे डेढ़ कट्ठामे

चौबगली घर-अँगना बना लेब। दू कट्ठा खुनि भरियो लेब आ दुनू कट्ठामे माछो पोसब। दू कट्ठामे फल-फलहरीक गाछ लगा लेब। तीमन-तरकारीले चौमासो भइए जाएत। काजो-उदेम आ खरिहाँनो-ले आगूमे खस्ते रखि लेब।”

जोगिन्दरक विचार सुनि मंगलक मनमे आश जगलैन। बजला-

“देखते छहक जे बथनाहामे अवधिया सभ अछि। ओकरा सभकेँ बहुत जमीन छइ। ओइमे सँ एकगोरे बैंकमे नोकरी करैए। समांगोक पातर अछि। असगरे नोकरी करत आकि खेती करत। सभ खेत बटाइ लगौने अछि। दस बीधा जमीन अपना गाममे ओकर छइ। जँ इच्छा हुअ तँ दसो बीघा कीनि लएह। अखन धरि ओकर जमीन ऐ दुआरे बँचल छै जे एक्केठाम बेचए चाहैए। नै तँ कहिया ने बिका गेल रहितै। मुदा एकटा बात पुछै छिअ जे अखन धरिक जे तोहर जिनगी रहलह ओ हमरासँ विपरीत रहलह। तोंही कहऽ जे दुनू गोरेक बीच केते दिन निमहत?”

मंगलक प्रश्न सुनि जोगिन्दर अवाक् भऽ गेल। कनी कालक पछाइत बाजल-

“मंगल भाय, तोहर शंका सोलहन्नी सही छह। दस गोरेक बीच बजैबला मुँह बनौने छह। मुदा सप्पत-किरिया खा कऽ कहै छिअ जे अपनो अपना जिनगीसँ मन उचैट गेल अछि, सदिखन होइत रहैए कखन सड़कपर घुमै छी आ कखन जहल चलि जाएब। ओना, रोडक सिपाहीसँ लऽ कऽ नीक-नीक पाइबला सभसँ चिन्हारे ऐछे मुदा ओ सभ पाइयक दोस छी। कहियो काल जे सूतलमे सपनाइ छी तँ ओहिना देखै छी जे आगू-पाछू बन्दूकक हाथे सिपाही घेरने अछि आ हाथमे कड़ी लगौने जहल नेने जाइए! कखनो सोचै छी तँ बुझि पड़ैए जे अपनाकेँ आगू-मुहेँ जाइत देखै छी, आ लगले होइए जे पाछू-मुहेँ तेजीसँ खसल जाइ छी! कखनो चैन नै रहैए..!”

बजैत-बजैत जोगिन्दरक आँखिमे नोर ढबढबा गेल। दुनियाँक

आकर्षण देख मंगलोक मन जेना पीघलए लगलैन। मनमे उठलैन मनुखमे एहेन अद्भुत शक्ति होइ छै जे एकाएक बदैल जाइए। डकैतसँ महात्मा बनि जाइए आ महात्मासँ डकैत। तँए मनुखक सम्बन्धमे किछु निश्चित कहब असम्भव अछि, अनुपमेय अछि। मुदा तैयो एकटा नमहर खाधि बुझि पड़ैए। हमरा तपमे बिसवास अछि जहन कि एहेन जिनगी उनटा छइ। उम्रमे भलेँ बेसी अन्तर नै हुअए मुदा जिनगी तँ दु-दिसाह अछि..!

मंगलकेँ अपन मात्रिकक एकटा बात मन पड़लैन। मात्रिक कोशिकन्हामे अछि। पूबसँ कोसी आ पच्छिमसँ कमला गामकेँ घेरने रहए। बिचला सभ धार एक-दोसरमे मिलल। ओइ गाममे बाँसक बोन। बाँसक एकटा बीट गहींरगरमे छल। खूब सहजोर बाँस रहए। चालीस-चालीस हाथक बाँस ओइमे। अगते धार फुला गेल। बाढ़ि आबि गेल। गामक सभ माल-जालक संग गाम छोड़ि कुटुमारे चलि गेल। कातिकेमे घुमि कऽ औत। एहेन परिस्थितिमे मातृभूमि केना स्वर्ग बनि सकैए! ओइ बाँसक बीटमे दस-बारह हाथ पानि लगल रहए। ओइ बीटमे दस-बारह हाथ ऊपरसँ सौंसे बीट कोंपर दऽ देलक। जे अपनो देखनहि रही...।

मन पड़िते मंगल सोचलैन जे अगर जँ मनुख संकल्पित भऽ जिनगी मोड़ए चाहत तँ जरूर मोड़ि सकैए। अपन परिवारक पाछू लोक चोरी-डकैती, बेइमानी, शैतानी सभ किछु करैए। हम तँ एकटा गिरल आदमीकेँ उठबए चाहै छी। मनमे खुशी उपकलैन। मुस्कियाइत बजला-

“भाय, जहिना तूँ दरबज्जापर आबि कहलह तहिना तँ हमरो मदैत करब फर्ज बनैए। मुदा आइ धरि अधला काज नै केलौं, तेकरो तँ निमाहैक अछि।”

मंगलक बात मंगलक पिता गणेशी सेहो सुनलैन। ओ लग्घी करए निकलल रहैथ। हाँइ-हाँइ कऽ लग्घी कऽ लगमे दुनू गोरेक बीच आबि कहलखिन-

“बौआ, तीस बरख पहिलुका एकटा खिस्सा कहै छिअ। ओइ समए जुआने रही। मोछ-दाढ़ीक पम्ह अबिते रहए। माइयो-बाबू जीबते रहैथ।

अहिना कातिक मास रहइ। तीन बजे करीब बेरू-पहर माथपर मोटरी नेने नाना हहाएल-फुहाएल एला...।

अबिते माएकेँ कहलखिन-

“दाइ, गंगा नहाइले जाइ छी। बहुत लोक गामक जाइ छइ। ओकरा सभकेँ कहने छिऐ जे टीशनेपर भेँट हेबह। ताबे कनी हमहूँ सुसता लइ छी आ तहूँ तैयार हुअ। खेबा-खरचा ऐछे तँए कोनो ओरियान करैक नै छह...।”

..नानाक बात सुनि माए ठर्रा गेल। एक दिन पहिने गाए बिआएल रहए। ऐ सभमे माए बड़ सुतिहारि। माइक मनमे दू तरहक बात टकरा गेलइ। ओमहर गंगा नहाइले जाएब आ एमहर जँ गाएकेँ किछु भऽ जाए? तहन तँ नअ मासक मेहनत डुमि जाएत? दोसर होइ जे गौंआँ-घरूआकेँ छोड़ि बाबू एला। गाड़ीए-सवारीक भीड़-भड़क्काक बात छी, जँ कहीं कियो भेँट नै होनि, तहन की हेतैन? तँए गुम्म रहए। तैबीच बाबूओ आबि गेला। गोड़ लागि ओहो कातमे ठाढ़ भऽ गेला। ने माए किछु बजैत आ ने ओ। नाना अपन बात बाजि चुकल छला तँए ने किछु बाजैथ। तीनू गोरेकेँ चुप देख कहलयैन-

“नाना पएर धुअ ने?”

ओ कहलैन-

“नै-नै, पएर-तएर नै धुअब। टेनक टेम भेल जाइए...।”

सामंजस करैत माए बाजल-

“बौआ, छोड़ैबला कोनो ने छह। नन्ना संगे तोंही जाह।”

...मन अपनो रहए मुदा बीचमे बाजब उचित नै बुझि चुप्पे रही। ओना भागवत सुनै काल एकटा खिस्सा सुनने रही जे गंगा तेहेन भारी धार अछि जइमे सौंसे दुनियाँक मनुखसँ लऽ कऽ चुट्टी-पिपरी धरि अँटि जाएत। तैयो पेट खालीए रहत। सएह देखैक जिज्ञासा रहए। नाना संगे विदा भेलौं। जखन गंगामे पैस दुनू गोरे नहाए लगलौं आकि नाना टोकलैन-

"नाति, मने-मन गंगाकेँ कहुन जे आइसँ झूठ-फूस नै बाजब।" सएह कहि डुम लेलौं। दू सालक पछाइत बाबू मरि गेला। घरक गारजन बनलौं। बाबूक मुइला पछाइत माइयो रोगा गेल। मुदा काज करैक सभ लूरि रहए तँए कहियो कोनो काजक अबूह नै लागए। अपन राजकाजमे सदिकाल लगल रहै छेलौं। कहियो झूठ बजैक जरूरते ने हुअए। दछिनबारि टोलमे सरूप रहए। दस बीघा खेतो ओकरा रहइ। मुदा रहए फुर्र-फाँइबला आदमी ललबबुआ। भरि दिन एमहरसँ ओमहर घुमल घुरइ। ताश जे खेलए लगै तँ बारह-दू बजे राति धरि खेलते रहइ। गामक लोककेँ टीक ओझरबैमे माहिर।

तेतबे नइ, पर-पनचैतीमे तेहेन पेंच लगा दइ जे मारि-पीटि भइए जाइत। कोट-कचहरीमे दलाली सेहो करइ। दस बीघा खेत रहितो दुइयो मास घरसँ नै खाए। ने अपने कोनो काज करैए आ ने खुट्टापर बरद रखने रहए। जे सभ झड़-झंझटमे फँसल रहए ओकरे सबहक बरदसँ खेतियो करैए आ ओकरे सभसँ ठकि-फुसिया कऽ गुजरो करइ। जेकरासँ जे चीज लइ ओकरा घुमा कऽ दइक नामो ने लइत।

एक दिन अपना ऐठाम आबि कहलक-

"गणेश, सुनै छी तूँ चाउर बेचै छह?"

हम कहलिऐ-

"हँ।"

कहलक-

"एक मन चाउरक काज अछि।"

कहलिऐ-

"भऽ जाएत। केकरो पठा देबइ, नै तँ अपने नेने जाएब तँ नेने जाउ।"

चाउर तौला कऽ कहलक-

"तोरा तगेदा करैक जरूरत नै छह। जखने हाथमे रूपैआ औत तखने दऽ देबह।"

कहलिऐ-

"बड़बढ़ियाँ। छह मास बित गेल। ने तगेदा करिऐ आ ने दिअए।

साल बित गेल। दोसर साल फेर ओहिना केलक। तेसरो साल केलक। झूठ केना बजितौं जे चाउर नै अछि। पाइयक दुआरे अपन काज खगैत रहए। काजकेँ बिथुत होइत देख मनमे आएल जे कमाइ छी हम आ खाइए ललबबुआ..! ई तँ सोझहा-सोझही गरदैनकट्टी भऽ रहल अछि! ओह, से नइ तँ आब कहत तँ गछबे ने करब। कहबै जे नइए। मुदा फेर मनमे उठल जे बीच गंगामे पैस संकल्प केने छी, झूठ केना बाजब? विचित्र स्थिति भऽ गेल। हारि कऽ झूठ बाजए लगलौं। मुदा एते जरूर करै छी जे जे झुट्ठा अछि ओकरा लग झूठ बजै छी आ जे झूठ बजनिहार नै अछि ओकरा लग सत् बजै छी। तँए बौआ कहि दइ छी जे अहाँ सभ जुआन-जहान छी सोचि-विचारि कऽ डेग उठाएब। जहिना दुनियाँ बड़ीटा छै, बड़ लोक छै, खेत-पथार धार-धूर, पहाड़-पठार, समुद्र इत्यादि की कहाँ छै, तहिना मनुखो अछि। एक्के कुम्हारक बनौल पनिपीबा घैल सेहो छी आ छुतहरो छी मुदा देखैमे दुनू एक्के रंग होइए!”



शब्द संख्या : 7699

2.

अमावसिया दिन। आइये साँझमे दिवाली आ निशाँ रातिमे कालीपूजा हएत। अखन धरिक जे काजक उत्साह सभमे रहै ओ ठमैक गेल। काजो आखरी रूपमे आबि गेल। ओरा गेल। जहिना साल भरिक अध्ययनक आखरी दिन परीछा दिन होइत, तहिना। काल्हि धरि काज गतिसँ चलैत रहल। जइ दिन जेहेन काज तइ दिन तेहेन रफ्तार। मुदा आइ तँ आखरी दिन छी तँए काजक उनटा गिनती कऽ लेब जरूरी अछि। हो-ने-हो किछु छूटि गेल हुअए। जँ छूटि गेल हएत तँ पूजामे बिघ्न-बाधा पड़त। तइ दुआरे पूजा समितिक बैसार सबेरे साते बजे बजौल गेल।

आठे दिनमे गामक चुहचुहीए बदैल गेल। जहिना हरोथ बाँसक जड़ि अधिक मोट रहितो बीचमे भूर कम होइत मुदा आगू ओइसँ पातर रहनौं भूर बेसी होइत तहिना बँसपुरोमे बुझि पड़ैत। जखन पूजाक दिन आगू छल तखन काज बेसी आ जखन लग आएल तँ कमि गेल। काल्हियेसँ गामक धी-बहिन आबि रहल अछि। ओना, गामक सभ अपन-अपन कुटुमकेँ हकार पहिनहि देने मुदा अबैमे दिवाली बाधक बनल छेलइ। दिवाली दिन घरमे नै रहने भूतक बसेराक डर सबहक मनमे नचैत रहइ जे आगू आरो पहपैट हएत। तँए गामक जे धी-बहिन असगरूआ अछि ओ भरदुतिया ठेकना कऽ दिवालीक परात औत। मुदा जेकरा घरमे दियादनी वा सासु अछि ओ किए ने एक दिन पहिनौं औत। नैहर छिऐ ने। केते दिन माए-बाप, भाए-भौजाइ आ गामक सखी-बहिनपासँ भेँट भेना भऽ गेल छइ। तहूमे जेकर नैहरक परिवार

जेरगर छै ओ तँ साले-साल वा सालमे दुइयो-तीन बेर आबि जाइए मुदा जेकर परिवार छोट छै, जइमे कम काज होइ छै, ओ तँ दस-दस सालसँ नैहरक मुँह-आँखि नै देखलक।

गामक सौभाग्य जे काली-पूजा शुरू भेल। मुदा एकटा अजगुत बात भऽ गेलइ। गामक धी-बहिनसँ बेसी सारि-सरहोजि आबि गेलइ। बेसी साइर-सरहोजि एलासँ गामक चकचकीए बढ़ि गेल। जइसँ छौड़ा-मारड़िसँ लऽ कऽ बुढ़-बुढ़ानुसक मुँहमे सेहो चौअन्नियाँ मुस्की आबि गेलैन, तहूमे परदेसिया साइर-सरहोजि आबि कऽ तँ आरो रंग बदैल देलक।

दुखक दिन गौंआँक कटि गेल। सुखक दिन आबि रहल अछि किएक तँ आठ दिन जे बीतल ओ ओहन बीतल जइमे ने केकरो खाइक ठेकान रहलै आ ने सुतैक। मुदा आब तँ सभ पाहुन-परकक संग अपनो पहुनाइए करत। मरदक कोन बात जे जनीजातियो खुशी! जे भनसिया आबि गेल। नीक-निकुत खेनाइ, दिन-राति तमाशा देखनाइ, ऐसँ सुखक दिन केहेन हएत। तहूसँ बेसी खुशी ई जे भरि मेला ने केकरो पैंइच-उधार करए पड़तै आ ने दोकान-दौरीक झंझट रहतै। किएक तँ दू दिन पहिनहि सभ अपन-अपन काज सम्हारि नेने छल। महाजनोक बोही-खाता बन्न रहत। मुदा दिवालीक बोहैनक दुख महाजनक मनकेँ जरूर कचोटै छेलइ। केतबो रेड़गड़ मेला किए ने हौउ मुदा दूध-दही, माछ-मौसक अभाव नै हएत। पाँच दिन पहिनहि सुधा दूधक एजेन्ट आ माछ-माउसक वेपारीकेँ एडभांस दऽ देने अछि। तहूमे काली-पूजा छी। बिना बलि-प्रदाने पूजो केना हएत। बँसपुराक जनीजातियो तँ ओते अनाड़ी नहियेँ अछि जे जोड़ा छागर कबुला नै केने हएत।

पहिल साल पूजाक छी। बिना नव वस्त्र पहिरने पूजा केना कएल जाएत आ धिया-पुता मेला केना देखत जँ से नइ हएत तँ की देवीक अपमान नै हेतैन?

जइ जगहपर काली मण्डप बनल ओ आठे-दस कट्ठाक परती अछि।

सेहो आम जमीन। जइसँ एकपेरियासँ लऽ कऽ खुरपेरिया लगा सौंसे परती रस्ते बनल रहइ। ओइ परतीक पच्छिम-उत्तर कोणमे लोक फूटल-फाटल माटियोक बरतन आ पड़सौतीक कपड़ो-लत्ता फेकैत। पूब-उत्तर कोणमे धिया-पुता झाड़ा फिरैत। दच्छिन-पच्छिम भागमे घसबाह सभ घास-घास खेलाइ दुआरे केतेको खाधि खुनने आ दच्छिन-पूब कोणमे कबड्डी आ गुड़ी-गुड़ीक चेन्ह दऽ घर बनौने।

काली-पूजाक आगमनसँ सौंसे परती छील-छालि एक-रंग बना देलक। जइ तरहक मेलाक आयोजन भऽ रहल अछि ओइ हिसाबसँ जगहो छुछुन लगैत। मुदा रौदियाह समए भेने परतीक चारू भागक खेतक धान मरहन्ना भऽ गेल, जेकरा काटि-काटि सभ अगते माल-जालकेँ खुआ नेने छेलै, तँए मेला-ले जगहक कमी नै रहल।

पनरह बीघासँ ऊपरे खेतक आड़ि-मेड़ तोड़ि चट्टान बना देलक। अगर जँ से नइ बनौल जाइत तँ मुजफ्फरपुरक ओहन नाटकक अँटावेश केना हएत? किएक तँ जइ पार्टीमे बाजा बजौनिहारसँ लऽ कऽ पुरुखक पाट खेलेनिहारि धरि मौगीए कलाकार अछि, संगीतकार सेहो खालीए मौगीए अछि तइ पार्टीकेँ देखैले परोपट्टाक लोक उनैट कऽ नै औत? ऐबे करत। तँए कमसँ कम पाँच बीघाक फील्ड देखनिहार-ले चाहबे करी। से तँ भइए गेल।

तैपर सँ वृन्दावनक रास सेहो अछि, नाटकसँ कनियोँ कम नहि। एक-पर-एक कलाकार अछि। मोट-मोट, थुल-थुल देह, हाथ-हाथ भरिक दाढ़ी-केश लऽ लऽ पार्टो खेलत आ नचबो करत। तँए देखनिहारोक कमी नहियेँ रहत। मेल-फिमेल कौव्वालीक संग महींसौंथाक मलिनियाँ नाच सेहो अछि। एक-पर-एक चारू। किए ने धमगिज्जर मेला लगत।

पूजा-समितिक सभ सदस्यक मनमे खुशी होइत मुदा एकटा शंका सबहक मनमे रहबे करइ। ओ ई जे एते भारी मेलाकेँ सम्हारल केना जाए? केतबो गौंआँ जी-जान लगौत तैयो लफुआ छौड़ा सभ छह-पाँच करबे करत। पौकेटमारो हाथ ससारबे करत। मुदा की हेतै, मेला-ठेलामे कनी-मनी ई सभ होइते छइ। केकरा के देखत आ केकर के सुनत। तहूमे रौतुका मसिम रहत

किने?

दोकानो-दौरीक आयोजन सेहो बेजए नहि। दुनू ढंगक दोकान। पुरनो आ नवको। नवका समान-ले न्यू मार्केट एक भाग आ दोसर भाग पुरना बजार बसल। ओना अखन धरि दोकान-दौरी नीक-नहाँति नै सजल अछि मुदा बेर टगैत सभ सजि जाएत।

न्यू मार्केटक चाक्-चिक् दोसरे ढंगक अछि जइमे बिनु देखलेहे समान बेसी रहत। दोकानदारो सभ बहरबैए रहत। एहेन-एहेन सुन्नर चूड़ी ऐ इलाकाक लोक देखनौं हएत, तेहेन-तेहेन चूड़ीक दोकान सभ आबि गेल अछि। देखनिहारोकेँ आँखि उठि जाएत। उठबो केना ने करत? एते दिन देखै छल जे चूड़ी स्त्रीगणेटा बेचै छेली, ऐबेर देखत जे पुरुखो बेचैए। तइमे तेहेन-तेहेन फोटो सभ दोकानक भीतरो आ बाहरोमे लगौने अछि जे अनेरे आगूमे भीड़ लगले रहत। असली मनुख छी आकि नकली से सभ थोड़े बूझत। फोटोए टा नै गीतो गबैबला तेहेन-तेहेन साउण्ड-बॉक्स सभ सजौने अछि जे सभ किछु बिसैर जाएत।

चूड़ी बजारक बगलेमे चेस्टरक दोकान लगल अछि। चूड़ी बजारसँ कम थोड़े ओहो वेपारी सभ सजौने अछि। काल्हियेसँ एहेन-एहेन प्रचारक मशीन सभ लगौने अछि जे कियो थोड़े परखि लेत जे आदमीक मुँह बजै छै आकि मशीन। परचारो कि हरही-सुरही छइ। समानक संग-संग पहिरैक लूरि सेहो सिखबैए। धैनवाद ओइ बनौनिहारकेँ दी जे हाथी सन-सन मोट देहसँ लऽ कऽ खिरकिट्टी देह धरिमे एक्के रंगक चेस्टरसँ काज चलि जाएत। तहूमे तेहेन डिजेनगर सभ अछि जे एकटा छोड़ि दोसर पसीनो करैक जरूरत नै पड़त। जेकरा पाइ छै ओकरा एकेटासँ थोड़े मन भरत? ओ तँ गेठक गेठ कीनत। बिल्कुल औटोमेटिक। दामो कोनो बेसी नहियेँ रखने अछि जे समानक बिकरी कम हेतइ। मात्र एगारहे रूपैआ। वेपारियो सभ तेहेन ओसताज अछि जे पहिनहि पता लगा समान डिकने अछि।

चेस्टरक दोकानक बगलेमे खेलौनाक बजार अछि। वाह रे! खेलौना बनौनिहार आ पूजी लगा वेपार केनिहार। दस रूपैआसँ लऽ कऽ हजार रूपैआ धरिक। बन्दूक, तोप, रौकेट, हवाइ जहाजक संग बम साइजिक खेलौना सभसँ दोकान भरने अछि। देखैमे असलीए बुझि पड़त मुदा अछि नकली। ओना असलेहे जकाँ गोलियो छुटैत, अवाजो होइत आ उड़बो करैए।

तीनटा दाढ़ी केश बनबैबला बम्बैया शैलून सेहो आबि गेल अछि। तीनूमे महिले कारीगर। मरदे जकाँ अपन रूप बनौने। मुदा मरदोसँ बेसी फुरीतगरो आ बजैयोमे चंगला। दाढ़ी कटबै काल बुझिये ने पड़त जे उनटा हाथ पड़ैए आकि सुनटा। हाथो मरदे जकाँ मुदा कनी गुलगुल बेसी।

शैलूनक बगलेमे साड़ी-बजार। साड़ियो सभ अजबे टँगने अछि। पुरजीमे रेशमी लिखि-लिखि सटने मुदा पटुआ जकाँ क्षल-क्षल करैए। केतौ ओचिला नहि, एकदम पलीन। तेहेन-तेहेन पटोर सभ रखने अछि जे बुझबे ने करबै ई भगलपुरिया रेशम छी आकि पटुआक। प्लास्टिकक मनुख बना तेहेन सजौने अछि जे बुझि पड़त आँखिक इशारासँ दोकानपर अबैले कहैए।

राम-हिलोरा, मौत-कुआँ, हेलिकेप्टर, हवाइ-जहाज, रेलगाड़ी, दिल्ली-चौकक चरि-पहिया, छह-पहिया गाड़ीक दौड़-बड़हा सभ अछि।

जखन न्यू मार्केट घुमियेँ लेलौं तँ पुरनो बजार घुमियेँ ली। कियो छपरीक दोकान बनौने तँ कियो फट्ठाक खुट्टापर बातीक कोरो बना प्लास्टिक दऽ घर बनौने अछि। कियो तिरपाल टँगने अछि, तँ कियो ओहिना चैला-डाबा इत्यादि माटिक बरतन पसारने अछि। दोकानदारो सभ सुच्चा ग्रामीण। अँइ! ई तँ चिन्हरबे दोकानदार सभ छी। पहिलुके दोकान झुनझुनाबला बुढ़बाक छी। चालिसो बर्खसँ बेसीएसँ झुनझुना बेचैए। आब तँ बुड़हा गेल। तैयो देखियौ, दुनू परानी दुनू दिस बैस ताड़क पत्ताक झुनझुनो बना रहल अछि आ खजुरक पातक पटिया, बीऐन सेहो सजौने अछि!

"तोरा तँ कनी कऽ चिन्है छिअ हौ झुनझुनाबला?"

"बौआ चसमा लगौने छी तँए धकचुकाइ छह। पहिने चसमा नै लगबै

छेलौं। आँखियो नीक छेलए। दू साल पहिने आँखि खराप भऽ गेल, अही बेर लहानमे आँखि बनेलौं।"

मुदा झुनझुनावाली परेख कऽ कहलक-

"बौआ सोनमा रौ? जहियासँ परदेस खटए लगलेँ तहियासँ नै देखलियौ। तूँ हमरा चिन्है छेँ?"

"नहि।"

"तोहर मामाघर आ हम्मर नैहर एक्के ठीन अछि, अँगने-अँगने झुनझुनो आ बिऐनो-पटिया बेचै छी। अहीसँ गुजर करै छी। आब तँ भगवान सभ किछु दए देलैन। दूटा बेटा-पुतोहु अछि। सातटा पोता-पोती अछि। दुनू बेटा घर जोड़ैया करैए, राज मिस्त्री छी। खूब कमाइए। आब तँ अपनो ईटाक घर भऽ गेल। मुदा दुनू परानी तँ जिनगी भरि यएह केलौं। आब दोसर काज करब से पार लगत। ओना दुनू भाँइ मनाहियोँ करैए। मगर हाथ-पर-हाथ धऽ कऽ बैसल नीक लगत। तँए जाबे जीबै छी ताबे करै छी। तोरा माएसँ बच्चेसँ बहिना लगल अछि। जहिया तोरा घर दिस जाइ छी तहिया बिना खुऔने थोड़े आबए दइए। माएकेँ कहि दिहैन जे अपनो दोकान मेलामे अछि। तोरा कएटा बच्चा छौ?"

"एक्केटा अछि।"

"एकटा झुनझुना बौआ-ले नेने जाही।"

"ओहिना नै लेबौ मौसी। अखन हमरो संगमे पाइ नै अछि आ तहूँ दोकान लगैबते छेँ। बिकरी बट्टा थोड़े भेल हेतौ।"

"रओ बोहैनक सगुन ओकरा होइ छै जे इद-बिद करैए। हम तँ अपन पोताकेँ देब। तइले बोहैनक काज अछि। ले नेने जाही।"

दोसर दोकान रमेसराक लोहोक समान आ लकड़ियोक समानक अछि। हँसुआ, खुरपी, टेंगारी, पगहरिया, कुरहैर, खनती, चक्कू, सरौता, छोलनीक संग-संग चकला, बेलना, कत्ता, रेही, दाइब, खराम, बच्चा

सबहक तीन पहिया गाड़ी इत्यादिक दोकान लगौने अछि। असगरे रमेसरा समान पसारि खुट्टामे ओङैठ, टाँग पसारने बीड़ी पीब रहल अछि! कहलिऐ-

"रमेसरा रौ। सुनने रहियौ जे तहूँ दिल्ली धए लेलेँ?"

"धुर्र बुड़ि, दिल्ली हौआ छिऐ। जहिना लोक कहै छै ने जे दिल्लीक लड्डू जेहो खाइए सेहो पचताइए आ जे नै खेलक सेहो पचताइए। दिल्लीसेट सभकेँ फुलपेन्ट, चकचकौआ शर्ट, घड़ी, रेडियो, उनटा बाबरी देख हमरो मन खुरछाँही काटए लगल। गामपर केकरो कहबो ने केलिऐ आ पड़ा कऽ चलि गेलौं। अपने जाति[3]क ऐठाम नोकरी भऽ गेल। तीन हजार रूपैआ महिना दरमाहा आ खाइले दिअए। मुदा तेते खटबै छेलए जे ओते जे अपने गाममे खटी तँ केतेक बेसी होइए। घुमि कऽ चलि एलौं।

जहिया सुनलिऐ जे अपनो गाममे काली-पूजाक मेला हएत तहियासँ एते समान बनौने छी। कहुना-कहुना तँ चारि-पाँच हजारक समान अछि। कोनो कि सड़ै-पचैबला छी जे सड़ि जाएत। तोरा सभकेँ ने बुझि पड़ै छौ जे दिल्लीमे हुण्डी गाड़ल अछि। हम तँ एक्के मासमे बुझि गेलिऐ। जखन अपना चीज-वौस बनबैक लूरि अछि तखन अनकर तबेदारी किए करब। अपन मेहनतसँ मालिक बनि कऽ किए ने रहब। तूँ सभ ने अनके कोठा आ सम्पैतकेँ अपन बुझै छीही। मुदा ई बुझै छीही जे धनिकहा सभ तोरे मेहनत लूटि कऽ मौज करैए। अखन जो, कनी दोकान लगबै छी।"

आगू बढ़लौं। अरे! ई तँ रौदिया भैयाक चाहक दोकान बुझि पड़ैए।

"अपने दोकान खोललह भैया?"

"हँ, बौआ। गामक मेला छी। एकर भीड़-कुभीड़ तँ गौआँएपर ने पड़त। ओहिना जे टहलैत-बुलैत रहितौं तइसे नीक ने जे दू पाइ कमाइयो लेब आ मेलाक ओगरबाहियो करब।"

"बेस केलह। बरतन-बासन अपने छेलह?"

"नहि। रघुनाथ लग बजलौं तँ वएह अपन पुरना सभ समान देलक।"

---

[3] बरही

“रघुनाथक दोकान तँ बड़ स्टेण्डर भऽ गेलइ।”

“चाहे दोकानक परसादे तीनटा बेटियोक बिआह केलक आ ईंटाक घरो बना लेलक।”

“वाह! बड़ सुन्दर, बड़ बेस।”

केते छोटका दोकानदार अखन छपड़ियो ने बनौने। कातिक मास रहने ने बेसी गरमी आ ने बेसी जाड़। तहन किए अनेरे बाँस-बत्ती कीनि घर बनौत। दूटा बाँसक खुट्टा गाड़ि ऊपरमे बल्ला दऽ देत। ओइपर केराक घौर टाँगि बेचत। तहिना कचड़ी-चप, पापड़-फोंफी-ले तँ माटियेमे चूल्हि खुनि लोहिया चढ़ा बनौत। मुरही पथियेमे रखि डिब्बासँ नापि-नापि बेचत। झिल्ली बनबैक साँचा तँ सभकेँ रहितो ने छै, जे बनौत।

झंझारपुरक आ मधेपुरक दस-बारहटा दोकानदार आबि कऽ मेलाक चुहचुहिये बदैल देलक। गहींकी सेहो चिन्हरबे आ दोकानदारो सएह। तँए सभसँ नीक कमाइ ओकरे सभकेँ हएत। नगद-उधार सभ चलतै। एक पाँतिसँ सभ दोकान बना रहल अछि।

पितोझिया गाछ लग के झगड़ा करैए! कनी ओकरो देख लिऐ। अरे! ई तँ दुनू परानी ढोलबा छी!

“एना किए ढोल भाय अबिते-अबिते ढोल जकाँ दुनू परानी ढबढबाइ छह?”

अवाज दाबि ढोलबा कहलक-

“हौ भाय, देखहक ने ऐ मौगीयाकेँ, मेलासँ जेकरा जे हानि-लाभ हौउ मुदा हमरा तँ सीजिन पकड़ाएल अछि, आगूमे छठि अछि। परोपट्टाक लोक तँ कोनियाँ, सूप, छिट्टा, डगरी कीनबे करत। ओइ हिसाबसँ ने समान बनबैत। से कहैए जे तीसे गो छिट्टा-पथीया मिला कऽ अछि। अट्ठारह गो सूप आ गोर पचासे कोनियाँ अछि! तोहीं कह, ऊँटक मुँहमे जीरक फोरनसँ काज चलत?”

कहलिऐ-

"ऐले झगड़ा किए करै छह? फेर लऽ अनिहऽ।"

ढोलबा कनी गम खेलक मुदा झपैट कऽ तेतरी बाजल-

"ऐ मरदावाकेँ एक्को मिसिआ बुधि छइ। एतनो ने बुझैए जे आठे दिनमे केते बनैबतौं। दूटा ढेनमा-ढेनमी अछि, ओकरो सम्हारए पड़ैए। ई तँ भरि दिन बाँस, बत्ती, कैमचीक जोगारमे रहैए। कोनो कि बजारक सौदा छिऐ जे रूपैआ नेने जाइतौं आ कीनि अनितौं।"

ढोलबा बाजल-

"तूँ नै देखै छीही जे महिनामे पनरह दिन काजक दुआरे नहेबो ने करै छी। तोहीं छातीपर हाथ रखि बाज जे एक्को दिन टटका भात-तीमन खाइ छी? डेढ़-दू बजे हकासल-पियासल बाँस आनै छी तखन गोटे दिन नहाइ छी ने तँ नहियेँ नहाइ छी आ धड़फड़ा कऽ खाइ छी फेर तुरन्ते काजेमे फेर लगि जाइ छी। निचेनसँ बीड़ियो-तमाकुल नै खाए-पिबए लगै छी। खा कऽ अराम केकरा कहै छै से तँ दिन कऽ सिहिनते लगल रहैए। तूँ की बुझबीही जे बाँस टोनै, फारै आ गादि लइमे केते भीर होइ छइ। बैसल-बैसल बानि चलबै छैं तँ बुझि पड़ै छौ अहिना होइ छइ। ई थोड़े बुझै छीही जे उठ-बैठ करैत-करैत जाँघ चढ़ि जाइए। ऐसँ हल्लुक साए बेर डन्ड-बैसकी करब होइ छइ। एते काज केला बाद जा कऽ बैसारी काज अबैए। बैसियो कऽ कारा-कैमची बनैबते छी। गुण अछि जे ताड़ी पीबै छी तँए मन असथिर रहैए आ मूड फरेश रहैए। तँए ने कोनो काज उनटा-पुनटा नै होइए। ने तँ केकर मजाल छिऐ जे एक्के दिनमे एते रंगक काज सेरिया कऽ कए लेत। अच्छा हो, दोकान लगा। दोकान की लगेमे, कोनियाकेँ तीन मेल बना ले। डगरी, सूप तँ एक्के रंग छौ आ छिट्टाकेँ दू मेल बड़का एक भाग आ छोटका एक भाग के लगा ले। पाँच गो रूपैआ दे कनी ताड़ी पीने अबै छी।"

"अखन रौद चरहन्त छइ। अखन जे ताड़ी पीबैले पाइ देबह से कि हमरा गारि सुनैक मन अछि।"

"आँइ गइ मौगिया, तोरा बजैत एक्को पाइ लाज नै होइ छौ, जे पुरुख

रहितो घरक भार सुमझा देने छियौ। संगियो-साथी सदिकाल किचारैत रहैए।”

“अच्छा रूपैआ दइ छिअ मुदा फेर बेरू-पहर नै मंगिहऽ। जाइ छह तँ जा मुदा झब-दे अबिहऽ। मेला-ठेला छिऐ असगरे हम दोकान चलाएब आकि बेदरा-बुदरी सम्हारब।”

“से कि हम नै बुझै छिऐ मुदा दसटा दोस-महिम अछि। अगर भेंट-घाँट भऽ जाएत तँ की कुशलो-छेम नै करब।”

बँसपुराक लड़कीक संग जे दुरबेवहार सिसौनीक दुर्गा-स्थानमे भेल ओइ घटनाक समाचार तरे-तर चारू भरक गाममे पसैर गेल छल। जेकर टीका-टिप्पणी गामे-गाम होइ छल। मुदा एक रूपमे नहि। अधिकतर लोक ऐ घटनाकेँ निन्दा करैत तँ कमतर मनोरंजन कहैत। किछु गोरे फैशन बुझि पाछुसँ अबैत बेवहार मानि बजबे ने करैत। मगर सभ किछु होइतो सिसौनीबला बँसपुराबलासँ सहमल। एहेन घटना आगू नै हुअए तइले सिसौनीक बुधिजीवी सबहक मनमे खलबली मचि गेल। सिसौनियेँक दयानन्द दरभंगा कौलेजमे प्रोफेसरी करै छैथ। गामक लोक तँ हुनका एकटा नोकरिहारा बुझै छैन मुदा कौलेजमे छात्रोक बीच आ शिक्षकोक बीच प्रतिष्ठित बेकती छैथ। ऐ बेर ओ दुर्गा-पूजामे गाम नै आबि प्रोफेसर दयानन्द संगीक संग रामेश्वरम् चलि गेल छला। मुदा बालो-बच्चा आ पत्नियोँ गाम आएल रहैन। वएह सभ रामेश्वरम् सँ एलापर घटनाक जानकारी देलकैन।

घटना सुनि प्रोफेसर दयानन्द मने-मन जरि गेला। गुम्म-सुम्म भऽ सोचए लगला, ई कोन तमाशा भऽ गेल जे धर्मक काजक दौड़मे एहेन अधर्म भऽ गेल! केना लोकक मनमे धर्मक प्रति आदर रहत! धर्मस्थलमे जँ एहेन-एहेन वृत्ति हएत तँ कएक दिन ओ स्थल जीवित रहत! केना केकरो माए-बहिन घरसँ निकिल देवस्थान पूजा करए वा साँझ दिअ औत!

प्रो. दयानन्द, जेते घटनाकेँ टोब-टाब करैथ तेते पैघ-पैघ प्रश्न मनकेँ

हौंरए लगलैन। मुदा जे समए ससैर गेल ओ उनैटो तँ नै सकैए। कोन मुहेँ ओइ गाम पएर देब। लोक की कहत? ओहू गामक तँ अनेको विद्यार्थी पढ़बो करैए आ पढ़ि कऽ निकललो अछि। ओ सभ की कहैत हएत। मुदा आगू एहेन घटना नै हुअए तेकर तँ प्रतिकार कएल जा सकैए। पाप तँ प्रायश्चितेसँ कटैए। तहूमे अगुरबारे बँसपुरासँ काली-पूजाक हकार-कार्ड सेहो आबि गेल अछि।

तत्-मत् करैत प्रो. दयानन्दक मनमे एलैन जे एकटा बेंग मरलासँ लोक इनारक पानि पीब तँ नै छोड़ि दैत अछि। ओकरा निकालि गन्धकेँ मेटबैक उपाय करैए। बँसपुराक काली-पूजाक आरम्भ सेहो सिसौनियेँक घटनाक प्रतिक्रिया स्वरूप भऽ रहल अछि। हो-ने-हो एकरे जवाबमे ओहो सभ ने घटना दोहरा दिअए?

काली-पूजा शुरू होइसँ तीन दिन पहिने प्रोफेसर दयानन्द गाम आबि, बिना कोनो मान-रोख केने गामक पढ़ल-लिखल उमरदार सभसँ सम्पर्क कऽ कहलखिन। किछु गोरे गामक प्रतिष्ठा बुझबो करै छला आ किछु गोरे बुझौलासँ बुझलैन। बुझला पछाइत एकमुँहरी सभ गाममे बैसार कऽ एकर निराकरण करैक विचार व्यक्त केलैन। सहमति सेहो बनल। दयानन्दक मनमे आगू डेग बढ़बैक साहस जगलैन। साहस जगिते कौलेजक विद्यार्थी सभकेँ बैसार करैक भार देलखिन। दू दिन समए बित गेल। जइ दिन काली-पूजा शुरू हएत तइ दिन भोरे सात बजे बैसार भेल।

सात बजेसँ पहिनहि दुर्गेस्थानमे सभ एकत्रित भेला। वैचारिक रूपमे गाम दू फाँक जकाँ भऽ गेल रहए। तँए अपन-अपन विचारकेँ मजगूत बनबैक विचार सबहक मनमे। जे सभ घटनामे शामिल रहए, ओ तीनू कार्यकर्ताक पिता बैसारमे नै आएल। नै अबैक कारण विरोध नै लाज होइ। तहूमे जखनसँ प्रोफेसर दयानन्द दरभंगासँ आबि गाममे घटनाक चरचा चलौलैन तखनेसँ मुँह नुकबए लगला।

मुदा मौलाएल घटना पुन: पोनैग गेल। ओना गामक एक ग्रुप, जेकरा कुकर्मी ग्रुप कहि सकै छिऐ, बल प्रयोगक योजना तरे-तर बनौने रहए। जइसँ

कोनो रस्ते ने गाममे खुजतै। मुदा गामक विशाल समूह, जे अधला काजसँ घृणा करैत, कैं एक रंगाह विचार। एक तरहक विचारक पाछू केते तरहक सोच अछि। किछु गोरेक सोच ई रहैन जे गाममे एकटा कुकर्मी समाज अछि जे सदिकाल किछु-ने-किछु करिते रहैए। परोछा-परोछी तँ एक-दोसरकैं गारि पढ़ैए मगर, बेर एलापर सभ एक-मुहरी भऽ जाइए। तँए घटना ओहन अस्त्र छिऐ जइसँ ओइ समाजकैं काटि-काटि लतियौल जा सकैए।

किछु गोरेक विचार रहैन जे जहिना तीनू गोरे दसगरदा जगहपर जुलुम केलक तहिना समाजक बीच लतियौल जाए। ओना, किछु गोरेक विचार ईहो रहैन जे हम सभ मनुखक समाजमे रहै छी नै कि जानवरक समाजमे। तँए मनुखक समाज बनइ। भलैं मनुखक समाज बनबैक जे प्रक्रिया होइए ओइ प्रक्रियाकैं क्रियान्वित कएल जाए...।

ललबाक विचार सभसँ भिन्न। किएक तँ जइ लड़कीक संग दुरबेवहार भेल छेलै ओ ओकर ममियौत बहिन।

ललबा कलकत्तामे ड्राइवरी करैए। दुर्गापूजामे गाम आएल। जइ दिन घटना भेल ओइ दिन ओ बुझबे ने केलक। जखनसँ बुझलक तखनसँ देहमे आगि लगि गेलइ। मने-मन योजना बना नेने रहए जे धनिकक टेरही केना झारल जाइ छै से समाजकैं देखा देबइ। नीक मौका हाथ लगल हेन। मुदा मनमे ईहो शंका होइ जे दयानन्द कक्काक आयोजन छिऐन जँ कहीं आगूमे आबि जेता तँ सभ विचार चौपट भऽ जाएत। सोचैत-विचारैत तँइ केलक जे चाहे जे होइ मुदा बिना जुत्तियौने नै छोड़बै। भलैं जिनगी भरि जहलेमे किए ने रहए पड़ए।

गामक सभ टोलक लोक, गोटि-पँगरा छोड़ि, बैसारमे आएल। प्रोफेसर दयानन्द उठि कऽ ठाढ़ भऽ बजला-

“ऐ बेरक दुर्गा-पूजामे जे घटना गाममे घटल, ओ समाज-ले बड़का कलंक छी। ऐ घटनाकैं जेते निन्दा कएल जाए ओते कम होएत। केते गोरे

बुझैत हेबै जे अनगौंआँ लड़की छल मुदा ई बूझब हमरा सबहक पड़ाइनवादी विचार हएत। जइसँ रंग-बिरंगक अधलासँ अधला घटना होइत रहत आ हम सभ मुँह तकैत रहब। तँए एहेन-एहेन घटनाकेँ रोकए पड़त।"

बिच्चेमे जे ग्रुप हंगामा करए चाहै छल उठि-उठि हल्ला करए लगल। हल्ला देख सभ उठि कऽ ठाढ़ भऽ विरोध करए लगल। ललबा प्रोफेसर दयानन्द दिस तकलक। दयानन्दक मुँहक रूखि तँ नै बदलल मुदा नोरसँ भरल-आँखि करिया मेघ जकाँ लटैक कऽ निच्चाँ-मुहेँ जरूर भऽ गेल छेलैन! बिजलोका जकाँ ललबा चमैक कऽ फाँइट चलबए लगल।

तीनूकेँ असगरे ललबा मारि कऽ खसा देलक। जाबे सभ शान्त भेल ताबे तँ तीनूक गाल-मुँह फुइल गेल मुदा तैयो ललबाक गरमी कमल नहि। जहिना खून केनिहारकेँ आरो खून करैक गरमी खूनमे आबि जाइए तहिना ललबोकेँ भेल। मुदा चारू दिससँ सभ पकैड़ ललबाकेँ घिचने-घिचने कात लऽ गेल। दुनू हाथ पकैड़ दया बाबू फुसफूसा कऽ कहलखिन-

"अगर समाजमे एक्कोटा बेटा अन्यायक खिलाफ अपनाकेँ उत्सर्ग कऽ देत तँ सैकड़ो बेटा धरतीमाताक गोदमे पैदा भऽ जाएत। मन थीर करह। ओना समाजक सभ तरहक समस्याक समाधान खाली मारियेटा सँ नै हएत आ ने केवल पनचैतीएसँ हएत। किएक तँ समस्या दू तरहक होइए। पहिल घटना विशेष परिस्थितिक होइ छै, जबकि दोसर सत्ता-विशेष वा बेवस्था विशेषक। अखुनका जे समस्या अछि ओ बेवस्था विशेषक छी तँए एहेन समस्याकेँ बलेसँ रोकल जा सकैए। नै तँ कोनो-ने-कोनो रूपमे चलिते रहत, मरत नहि।"

प्रोफेसर दयानन्दक विचार सुनि ललबा बाजल-

"कक्का, अहाँ लग किछु बजैत-करैत संकोच होइए, नइ तँ तीनूक खून पीब लैतिऐ। भलेँ जिनगी भरि जहले किए ने कटितौं, फाँसीएपर किए ने चढ़ितौं। की लऽ कऽ एलौं आ की लऽ कऽ जाएब। जखन मरनाइ ऐछे तँ लड़ि कऽ किए ने मरब जे सड़ि कऽ मरब।"

ललबाक बात सुनि मुस्कियाइत प्रोफेसर दयानन्द बजला-

"अल्होमे लोक गबैए 'रनमे मरे दोख नै लागे।' तहिना महाभारतमे व्यासो बाबा कहने छथिन- 'इन्द्रासनक अधिकारी वएह छी जे अन्यायक विरूद्ध रनक्षेत्रमे ठाढ़ भऽ अपन बलि चढ़ौत।' मुदा जे भेल से उचित भेल। ऐसँ आगू नै बढ़ह। अगर जँ ऐसँ सुधैर जाएत तँ बड़बढ़ियाँ नै तँ ओकर फल आन थोड़े भोगत। तूँ एतै रहऽ।"

कहि आगू बढ़ि दयानन्द सोचए लगला जे समाजक अध्ययन नीक नहाँति नै भेल अछि। लोकक जे रूखि बनि गेल अछि ओ कखनो बेकाबू भऽ सकैए। तँए सभकेँ गामपर जाइले कहि दिऐ...।

कहि तँ देलखिन मुदा कियो मैदान छोड़ैले तैयार नै भेल। सभ अड़ल। विचित्र स्थितिमे अपनो पड़ि गेला। मनमे नाचए लगलैन जे सभसँ पहिने हमहीं केना मैदान छोड़ि देब। मुदा रहनौं तँ लोक मानि नै रहल अछि। दोहरा कऽ बजला-

"सभ गोरेक परिवार आइयेसँ नै बहुत दिनसँ एकठाम रहैत एलौं आ आगुओ रहब। तँए सभकेँ मिल-जुलि रहैक अछि। केकरो संग कियो अधला करबै तँ झंझट हेबे करत। एक परिवारक झगड़ा गाम-समाजक झगड़ा बनि जाइए। तँए झगड़ाकेँ रोकैक उपाय एक्केटा अछि जे ओहेन कारणे ने उठै जइसँ झगड़ा हुअए।"

कहि प्रो. दयानन्द घर दिसक रस्ता पकड़लैन। मुदा सभ मैदानमे डँटले रहल। प्रोफेसर दयानन्दक विचारक असर तेनाहे सन लोकक मनपर पड़ल। किएक तँ एहेन-एहेन घटना पूर्वमे अनेको भऽ चुकल छेलइ। जे सबहक मनमे उपकए लगल।

दयानन्द बाट धेने आगूओ बढ़ल जाइ छला आ पाछू घुमि-घुमि देखबो करै छला जे फेर ने तँ पटका-पटकी शुरू भेल। ओना केकरो हाथमे ने लाठी अछि आ ने हथियार मुदा देह तँ छइ।

प्रो. दयानन्द पाँच बीघा आगू बढ़लापर लग्घी करैक लाथे बैस हिया-

हिया देखैथ। जे कियो हाथ-पएर ने तँ फरकबैए। मुदा से नइ देखलैन। पहिने मारि खेलहा सभ मैदान छोड़लक। पाछूसँ सभ अपन-अपन रस्ता धेलक। ठंढाएल रूखि देख अपनो उठि कऽ विदा भेला।

घरपर आबि प्रोफेसर दयानन्द पत्नीकेँ कहलखिन-

“बँसपुरा जाइक समए दसे बजेक बनौने छेलौं मुदा बैसारेमे बेसी समए लगि गेल। तँए आब नहाए नै लगब। झब-दे खाइले दिअ। ताबे हाथ-पएर धोइ लइ छी।”

पतिक बात सुनि पत्नी किछु नै बजली। बूझल रहैन जे एना केते दिन भेल अछि जे काजक धड़फड़ीमे नहाइयो नै लगै छैथ।

नअ बजैत। बगुरबोनीक भगत कफलाक संग बँसपुरा काली-स्थान पहुँचल। भगतजीक हाथमे लोटा आ जगरनथिया बेंत। डलबाह-मनटुनक हाथमे सिक्कीक चौड़गर चङेरी, जे मधुबनी बजारमे कीनने रहए। चङेरीमे फूल-अछत, अगरबत्ती आ सलाइ रखने रहए। निरधनक कन्हामे मिरदंग लटकल। रविया आ सैनियाँक हाथमे झालि। सोमना हाथमे एकटा बसनी; सरही आमक पल्लो आ पान-सातटा सूखल कूश। बुधबाक कान्हपर एकटा मुठबाँसी बाँस, जेकरा छीपमे आल रंगक पताका आ तीन हाथ जड़िसँ ऊपर ओहने रंगक कपड़ाक टुकड़ा बान्हल। सभ एक-सूरे ‘काली महरानी की जय’क नारा लगबैत।

पूजा समितिक सदस्य बैस अपन काजक हिसाब लगबैत रहए। छलगोरिया मूर्तिक अन्तिम परीक्षण मण्डपमे करैत रहए। भगतजीक क्रिया-कलाप देखैले एक्के-दुइए लोक जमा हुअ लगल। पूजा समितिक सदस्य अपन हिसाब-वारी रोकि भगतजी सभकेँ देखए लगल। काली मण्डपक ओसारपर भगतजीक मेड़िया सभ अपन-अपन समान रखि हाथ-पएर धोइले बगलेक पोखैर विदा भेल। अछींजल भरैले सोनमा बसनी लऽ लेलक। भगतजीक हाथमे लोटा।

हाथ-पएर धोइ सभ कियो काली मण्डपक आगू आबि एकटंगा दऽ दऽ गोड़ लगलक। गोड़ लागि निरधन मिरदंग चढ़बए लगल। सैनियाँ आ

रविया झालि बजबए लगल। पोखैरसँ आबि भगतजी हाथमे लोटा नेने ठोर पटपटबैत मण्डपक आगू ठाढ़ भऽ आँखि बन्न कऽ सुमिरन करए लगला। बुधबा मण्डपक आगूमे, थोड़े हटि कऽ धूजा गाड़ए लगल। बरसपैतिया भगैत उठौलक-

"हे काली मैया...।"

जेना सभ काजक बँटबारा पहिने कऽ नेने रहए तहिना। ठाढ़े-ठाढ़ भगतजी देह थरथरबए लगला। गोसाँइ आबि गेलखिन। भगतजीक आगूमे डलिबाह दुनू हाथे डाली पकड़ने। थोड़े कालक पछाइत भगतजी चङेरीमे सँ फूल-अछत लऽ उत्तर-मुहें खूब जुमा कऽ फेकलैन। फेर फूल-अछत लऽ गंगाजीक नाओं लैत दच्छिन-मुहें फेकलैन। चारि मुट्ठी चारू दिस फेक पाँचम मुट्ठी ऊपर फेकैत जोरसँ बजला-

"ओ... ओ...।" कहि अपन परिचए कालीक नाओंसँ देलखिन।

कालीक नाओं सुनि डलिबाह बाजल-

"हे माए, किछु वाक् दियौ?"

भगत-

"ऐ जगहक भाग्य चमैक गेल। एकरा निच्चाँमे साक्षात गंगाजी बहै छथिन। ई स्थान बनने गाममे कोनो डाइन-जोगिनक किछु नै चलत। एते दिन गामक लोक बड़ कलहन्तमे रहै छेलै मुदा आब सभ खुशीसँ रहत। कोनो कुशक-कलेप केकरो नै लगत।"

गामक खुशहाली सुनि पूजा समितिक सभ सदस्यक मनमे नव आनन्दक जन्म भेल।

देवनाथ पुछलक-

"हे माए, अहाँ की चाहै छी?"

"ई स्थान हमर छी। अखन धूजा गाड़ि पीरी बनेलौं। सभ दिन पूजो करब आ बेरागने-बेरागन गोसाँइ सेहो खेलब। जेकरा जे कोनो उपद्रव देहमे

हेतै ओ डाली लगौत। फूल दइते छूटि जेतइ।”

धूजा गाड़ि, पीरी बना बुधबा तुलसियोक गाछ रोपि देलक। समितिक सभ चुपचाप भऽ देखैत रहए। केकरो मनमे कोनो शंके नै उठल। किएक तँ अनेको स्थानमे गहवरो रहैए।

मुस्की दैत देवनाथ पुछलकैन-

“हे मैया, अपन कोनो पहचान दियौ?”

झपैट कऽ भगत-रूप काली बजली-

“तूँ जे जानक बदला जान गछने रहऽ से देलह? जखन जान गड़ूमे रहऽ तखन के बँचौने रहऽ गड़ू मेटा गेलह तँ सभ किछु बिसैर गेलहक! अखनो धरि जे बँचल छह से स्त्रियेक धरमे। जेहने तोहर स्त्री धरमात्मा छथुन तेहने तूँ पापी छह। हुनके धरमे अखन धरि बँचल छह। नै तँ कहिया ने तोहर नाश भऽ गेल रहितह।”

भगतक बात सुनि देवनाथक मनमे लड़कीबला घटना ठनकल। जवाब नइ दऽ चुपचाप दुनू हाथ जोड़ि बाजल-

“हे माए, बिसैर गेल छेलौं भने मन पाड़ि देलह।”

देवनाथपर सँ नजैर हटा भगत जोगिन्दरकैं कहलक-

“तूँ जे कबुला केलह से देलह? जखन जान उकड़ूमे फँसल रहऽ तखन केते बेर कहि कऽ गछने रहऽ। ओना तोहर बारहअना ग्रह कटि गेलह सिरिफ चारि-अना बँचल छह। तँए दान-पुन कऽ कऽ जल्दी ओकरो मेटा लएह।”

जोगिन्दरकैं ओइ रातिक घटना मन पड़ल जइ राति रूपैआ लऽ सेठक ऐठामसँ पड़ाएल रहए। दुनू हाथ जोड़ि बाजल-

“हे मैया, ठीके बिसैर गेल छेलौं। जल्दीए तोहर कबुला पूरा करबह।”

बीच-बचाव करैत डलिवाह बाजल-

“आइ पहिल दिन गोसाँइ जगबे कएल, ऐसँ बेसी आब कोनो काज ने हएत।”

डलिबाहक बात सुनि भगत उत्तर-मुहेँ ठाढ़ भऽ दुनू हाथ उठा आँखि मूनि लेलक। काली देहसँ निकैल गेलखिन। सामान्ये आदमी जकाँ भगतो

भऽ गेल। झालि-मिरदंग आ भगैत सेहो बन्न भऽ गेल। आँखिक इशारासँ भगत डलिबाहकेँ कहलैन-

“काज सुढ़ियाएल अछि।”

आँखियेक इशारासँ डलिवाह उत्तर देलकैन-

“हँ।”

समितिक सदस्य भगत लगसँ हटि पुन: बैसारमे आबि जाइ गेला। मुदा एकटा नव समस्या समितिक सामने उपस्थित भऽ गेल। समस्या ई जे कि गहबरो बनौल जाए आकि धूजा उखारि कऽ फेक देल जाए?

मुदा दुनू तरहक विचार उठि गेल। किछु गोरे गहवरक समर्थनो केलक आ किछु गोरे विरोधो केलक। बीचमे मंगलकेँ किछु फुरबे ने करइ। मने-मन सोचैथ जे ई तँ बेर परहक भदबा आबि गेल। जँ मनाही करब तँ शुभ काज अशुभेसँ शुरू हएत। जँ नै करबै तँ सभ दिना भदबा ठाढ़ भऽ जाएत। भगतकेँ मंगल चिन्हतो नै रहैथ मुदा बगुरबोनीक भगतक विषयमे बूझल रहैन जे एकटा कोखिया गुहारि केनिहार-भगत जहल गेल रहए। वएह भगत छह मास जहल काटि हालेमे निकलल छेलइ। बगुरबोनीक गहवरकेँ बदनाम बुझि दोसर गहवर जगबए चाहैए। भगता जहल किए गेल?

बगुरबोनीक भगता मथ-दुखीसँ लऽ कऽ कोखिया गुहारि धरि करै छल। एक दिन एकटा नोकरिया अपन घरवालीकेँ लऽ कऽ कोखिया गुहारि करबए बगुरबोनी गहवर आएल। शुक्र दिन रहइ। तीनू बेरागनमे शुक्र सभसँ नीक बूझल जाइए। खूब डील-डालसँ डाली सजा अनने रहए। आन-आन कोखिया गुहारिमे कहालीक संग बूढ़-बुढ़ानुस स्त्रीगण सभ अबै छल, तँए कहियो कोनो रक्का-टोकी नै होइ। मुदा ओ बुड़िचोन्ह नोकरिया अपन घरवालीक संग अपनो आएल। बुड़िचोन्ह एहेन जे कलकत्तामे नोकरी करितौ अस्पताल देखले ने रहइ। पूजा ढारि भगत ओकरा कहलकै-

“गहवरक सीमासँ हटि जाह।”

सौंझका समए रहइ। अन्हारो भइए गेल रहइ। ओकरा मनमे शंका जगलै। ओ हटैले तैयारे ने भेल। दुनू गोरेक बीच रक्का-टोकी शुरू भेल। रक्का-टोकीक पछाइत ओ गहवरसँ निकैल बहराक जाफरी लग चलि आएल। मुदा आँखि-कान ठाढ़ केने रहल। असगरे भगत आ ओ औरत गहवरक भीतर रहल।

देह थरथरबैत भगत पहिने औरतक देहपर हाथ देलक। औरत गुहारि बुझि किछु नै बाजल। जखन भगत ओकरा पीरीक आगुमे पड़ैले कहलक तखन ओ जोरसँ घरबलाकेँ सोर पाड़लक। घरवालीक अवाज सुनि दौग कऽ आबि सोझे भगतपर हाथ छोड़ए लगल। भगतोक अपन घर छेलइ। केना अपना घरमे मारि खा बरदास करैत।

हल्ला सुनि पान-सात आदमी पहुँच गेल। सभ भगतेक लाइग-भाइगक। भगतकेँ कहिते ओ सभ ओकरा थोपड़ा देलकै। दू-चारि थापर मौगियोकेँ लगलै। वएह आदमी थाना जा दोसर दिन केस कऽ देलक। तेसरे दिन भगत जेल चलि गेल।

जखनसँ जोगिन्दर सुनलक जे चारि-अना ग्रह बाँकीए अछि जे दान-पुन केलासँ कटत, तखनसँ मनमे उड़ी-बीड़ी लगि गेलइ। मनमे होइ जे भगत ठीके कहलक। जखन रूपैआ लऽ टेम्पूपर चढ़लौं तखन ठीके कबुलो केलौं आ भरि रस्ता गोढ़ियबितो गेल रहिऐन।

भरि रस्ता काली माय, काली माय, सेहो जपैत गेल रही। एते बात जखन मिलि गेल तँ चारि-अना ग्रह केना झूठ भऽ सकैए? दाने-पुन केलासँ ने ग्रह कटैए। मुदा दान-पुन करैक तँ केतेको रस्ता अछि। तहूमे फुटा कऽ किछु नै कहलक। कियो भोज-भनडारा करैए तँ कियो तीर्थ-स्थानमे धर्मशाला बनबैए, कियो-पोखैर-इनार खुनबैए तँ कियो स्कूल-कौलेज बनबैए। तहिना कियो अस्पताल बनबैए तँ कियो अन्न-वस्त्र दान करैए। दान-पुन करैक तँ अनेको जगह अछि! हम की करी?

फेर मनमे एलै जे एते दिन केकरोसँ दोस्ती नै केने छेलौं, तँए अपने फुरने किछु करैत रहलौं। मुदा आब तँ मंगलसँ दोस्ती भऽ गेल अछि तँए

हुनके पुछि लेब जरूरी अछि।

पूजा समितिक सभ सदस्य कालीए स्थानमे छल, किएक तँ औझुका काज सभसँ झनझटिया अछि। केतौ दोकान बनबैक तँ केतौ चन्दा-बेहरीक। मुदा तैयो जोगिन्दर मंगलकेँ बैठकसँ उठा कात लऽ गेल। कातमे लऽ जा कहलक-

"भाय, भगतजी ठीके कहलैन जे तोरा चारि-अना ग्रह बाँकीए छह?"

मंगल-

"तोरा अपनो बिसवास होइ छह?"

"हँ। केना नै बिसवास हएत। कोनो कि झुठे गोसाँइ खेलाइए?"

जोगिन्दरक बात सुनि मंगल मने-मन सोचए लगला जे एक दिस दोस्ती भेल आ दोसर दिस दुश्मनीक रस्ता सेहो बनि रहल अछि। अखन धरि वएह ओझा-गुनी लोककेँ ओझरौने अछि, तैयो लोकक बिसवास जमले छइ। कोन जरूरी छेलै जे बिना कहनहि-सुननहि अपने मने चलि आएल।

ठीके गोसाँइ जी कहने छथिन जे "भइ गति साँप छुछुन्दर केरी।" अगर भगतकेँ भगा देबै तँ तेहेन बबंडर करत जे पूजा पूजे रहि जाएत। जँ नै भगेबै तँ गहवर बना बड़का तमाशा ठाढ़ करत। सोचैत-विचारैत मंगल जोगिन्दरकेँ कहलखिन-

"तोहर अप्पन की विचार होइ छह?"

जोगिन्दर-

"भाय, जँ अपना मने करैक रहितए तँ तोरा किए पुछितिअ?"

जोगिन्दक विचार सुनि मंगलक मन आरो ओझरा गेलैन। कनी काल गुम्म रहि बजला-

"भाय, तूँ केते दान करए चाहै छह। दान-पुनक अनेको जगह अछि।"

जोगिन्दर-

“जेते दान-पुनक जगह देखै छिऐ ओ लगले थोड़े हएत। जे लगले हएत वएह करब।”

मंगलक मनमे फेर शंका उठल जे हो-ने-हो, ई ई ने कहि दिअए जे ईंटाक गहवर बना देबइ। जँ से कहत तँ ने विरोध करैत बनत आ ने समर्थने। चपाड़ा दैत बजला-

“बड़ सुन्दर विचार छह। हमहूँ यएह कहैले छेलिअ।”

“मनमे होइए जे गाममे जेते विधवा, नि:सहाय मसोमात अछि ओकरा सभकेँ मदैत कऽ दिऐ।”

मसोमातक नाओं सुनि मंगलक मनमे खुशीक लहैर उठि गेलैन। हँसैत बजला-

“बड़ चिक्कन बात बजलह। मुदा मसोमातक विषयमे कनी बुझह पड़तह।”

“की?”

“अपना ऐठाम दू तरहक मसोमात अछि। एक तरहक सरकारी अछि आ दोसर तरहक समाजक अछि।”

“नै बुझलौं?”

“सरकारी मसोमात ओ छी जे सरकारक देल सभ सुविधा पबैए। आ समाजिक विधवा ओ छी जेकरा ने सरकार जनै छै आ ने ओ सरकारकेँ जनैए। किछु गनल सरकारी मसोमात अछि जे ओकर पोसुआ छी। जे कोनो सरकारी सुविधा मसोमात सभ-ले औत ओ ओकरे भेटतै।

अजीब खेल सरकारो आ मसोमातोक अछि। ओही पोसुआ मसोमातकेँ इन्दिरा आवासक घरो छै आ बाढ़ि-बर्खामे घरखस्सीक रूपैआ सेहो भेटतै आ बाढ़िसँ क्षति फसलक क्षतिपूर्तिक रूपैआ सेहो ओकरे भेटतै। तेतबे नहि, वृद्धावस्था पेंशन सेहो ओकरे भेटतै आ रोजगार चलबैक नाओंपर सब्सिडी सेहो ओकरे भेटतै। तँए सरकारी मसोमात छोड़ि जे निरीह समाजक मसोमात अछि, जँ ओकरा जीबैक उपाय भऽ जाए तँ उपय केनिहारकेँ ऐसँ बेसी दान-पुनक फल केतए भेटतै। धैनवाद ओइ माए-दादीकेँ दी जे सत्तैर-

अस्सी बर्ख बितौलाक बादो जेठक दुपहरिया, भादवक झाँट आ माघक शीतलहरीमे, जी-जानसँ मेहनत करैए। धैनवाद ओइ अस्सी बर्खक मैयाकेँ दी जे माथपर धान, गहुम, मकैक बोझ लऽ कऽ दुलकी चालिमे गीत गुनगुनाइत खेतसँ खरिहाँन अबै छैथ..।

..तँए, कहबह जे अखन तँ मेलाक धुमसाही अछि, मेलाक पछाइत सभकेँ अपन रोजगारक उपय कऽ दिहक। काज करब अधला नहि मुदा ओ शरीरक शक्तिक अनुकूल काज हुअए। अखन तत्-खनात पाँच दिनक मेला भरिक बुतात, मेला देखैले किछु नगद आ एक-एक जोड़ साड़ी आ आङी दऽ दहक। मुदा बीचमे एकटा बात आरो छह, जे हमर मिथिलाक धरोहर सम्पैत सेहो छी। ओ ई जे जे जिनगीक चारू पायासँ हारि चुकल अछि, दुखक पहाड़क तरमे पिचाएल अछि मुदा आत्मबल एते सक्कत छै जे दान लइसँ आना-कानी करतह। तँए पहिने जा कऽ ओइ मैया सभकेँ गोड़ लागि कहिहक-

'बाबी, समाजरूपी परिवारक अहूँ छी आ हमहूँ छी, तँए कमाइबलाक ई दायित्व बनि जाइए जे परिवारमे वृद्ध आ बच्चाक सेवा इमानदारीसँ होइ। हम अहाँकेँ मदैत सेवाक रूपमे दऽ रहल छी।'

..तखन जरूर ओ वेचारी हँसि कऽ लेथुन आ मनसँ असिरवाद देथुन।"

मंगलक विचार सोझे जोगिन्दरक करेजमे घुसल। करेजमे घुसिते तिलमिला गेल। जेना ओइ मसोमात सबहक हृदए जोगिन्दरक हृदैमे धक्का मारि प्रवेश करए लगलै। मन पसीज गेलइ। ओना, जइ गाममे जोगिन्दरक जन्म भेल अछि ओइ गाममे अनेको मसोमात पहिनौं छल आ अखनो अछि। मुदा मसोमातक जे रूप जोगिन्दर आइ देखलक ओ पहिने नै देखने छल। कँपैत मनसँ मंगलकेँ कहलकैन-

"भाय, जे कहलह से अखने कऽ लइ छी। मुदा ऐसँ मन नै मानि रहल

अछि। मेलाक पछाइत नीक जकाँ विचारि किछु करब।"

प्रोफेसर दयानन्द, साइकिलसँ सोझे बँसपुरा विदा भेला। गामक सीमा टपिते देखलैन जे एकटा शिक्षक -जेकर बहाली शिक्षा मित्रमे डेढ़ हजार रूपैआपर भेल, बिच्चे रस्तापर साइकिल लगा मोबाइल कानमे सटौने रहए। मुदा किछु बजला नहि। मनमे भेलैन जे एक तँ अहिना अबेर भेल अछि, तैपर जँ किछु कहबै आ रक्का-टोकी शुरू करत तँ अनेरे आरो समए लागत। मुदा मन असथिर नै रहलैन।

सोचए लगला- अखन तँ दरभंगा कौलेजक लगेमे डेरा अछि। मुदा जहिया एम.ए. पास केने रही, तहिया अपना साइकिलो ने रहए आ डेरो दूरमे छल। पएरे डेढ़ कोस चलि कौलेज पढ़बैले जाइ-अबै छेलौं। जहन कि देखै छी गामक शिक्षक गामेक स्कूलमे काज करैए आ मोटर साइकिलसँ जाइ-अबैए! हजार रूपैआक नोकरी केनिहार तीन हजारक अपन जिनगी बनौने अछि। की ओइ शिक्षकसँ पुछि सकै छिऐन जे अहाँ अपन जिनगीक सीमा बुझै छी? जँ नै बुझै छी तँ अहाँ पढ़ेबै की? बच्चा सभ अहाँसँ की सिखत?

ई सभ सवाल मनमे उठिते दयानन्दक मन उलैझ गेलैन। मनमे उठलैन जे जहिना खरहोरिमे पैसैले दुनू हाथसँ खढ़ हटबए पड़ै छै तहिना सभ उलझनकेँ मनसँ हटबैत बँसपुराक सम्बन्धमे सोचए पड़त।

सिसौनीक बैसारक समाचार बिर्ड़ो जकाँ लगले चारू भागक गाम सभमे पहुँच गेल। बँसपुराक काली-पूजा समितिक बैसारमे सेहो सिसौनियेँक चर्च चलैत। प्रोफेसर दयानन्दकेँ देखते मंगलो आ देवनाथो उठि कऽ ठाढ़ भऽ दुनू हाथ जोड़ि प्रणाम केलकैन। प्रणाम कऽ मंगल दयानन्दक हाथसँ साइकिल पकैड़ मण्डपक बगलमे लगा देलक। साइकिल ठाढ़ कऽ मंगल दया बाबूक हाथ पकैड़ बैसारमे लऽ गेलैन। समितिक बिच्चेमे एक-साए-एक रूपैआ चन्दा दैत प्रोफेसर दयानन्द बजला-

"एकाएक अहाँ सबहक मनमे काली पूजा केना आएल?"

प्रोफेसर दयानन्दक प्रश्नमे रहस्य छिपल छल। तँए कियो किछु उत्तर देबे ने केलकैन। सिसौनियेँक दुर्गा-पूजाक घटनाक प्रतिक्रिया-स्वरूप भऽ

रहल अछि। जइ बातकेँ छिपबैत कियो किछु नै बाजल। मुदा दयानन्दक प्रश्न ऐसँ अलग छेलैन। हुनकर प्रश्न छेलैन जे दुर्गा-पूजा तँ शक्तिक पूजा छी जे संगठनक होइत, जखन कि काली-पूजा कालक छी, माने समैयक। प्रश्न उठैए जे शक्तिक संचयमे समैक की योगदान होइत अछि। मुदा अपन रहस्यमय विचारकेँ छिपबैत दयानन्द बजला-

"बड़ सुन्दर काज अहाँ सभ केलौं। ऐसँ समाजमे नव चेतनाक उदय होइ छइ। जे सभ समाज-ले जरूरीए अछि।"

प्रोफेसर दयानन्द आ बँसपुराक काली-पूजा समितिक सदस्यक बीच गप-सप्प चलिते छल आकि दयानन्दकेँ तकैत बरहरबा गामक प्रोफेसर कमलनाथ मोटर-साइकिलसँ पहँचला। प्रोफेसर दयानन्दकेँ कनडेरीए आँखिये कमलनाथ निच्चासँ ऊपर माने पएर-सँ-माथ धरि देख बजला-

"दयाबाबू, हम तँ अहींकेँ भँजियबैत घरपर होइत एलौं हेन।"

कमलनाथक बातक उत्तर नै दऽ दयानन्द मुस्की दैत बजला-

"भाय साहैब, कनीए काल ऐठाम देख लइ छी, तखन दुनू भाँइ संगे चलब। अपने पढ़ौल शिष्य सभ पूजाक आयोजन कऽ रहल छैथ।"

देवनाथो आ मंगलो, कौलेजमे दयानन्दसँ पढ़ने छल। तँए दयानन्दकेँ विशेष सिनेह रहैन। प्रोफेसर कमलनाथ सेहो बिच्चेमे बैस गप-सप्प सुनए लगला। पूजाक सभ बेवस्था बुझि दयानन्द मंगलकेँ कहलखिन-

"अखन तँ ओहिना बुझै दुआरे आएल छेलौं मुदा रातिमे, परिवार सहित सभ कियो देखैले आएब। कनी काल आरो थम्हितौं मुदा भाय साहैब कमल बाबू आबि गेल छैथ। भाय साहैबकेँ तोँ सभ नै चिन्हैत हेबहुन। हमर गुरु भाय छैथ। चारि बरख हिनकासँ पढ़ने छी। दस बर्ख पहिने कौलेजसँ सेवा-निवृत्त भेला। अपने पड़ोसिया सेहो छैथ। बरहरबे घर छिऐन।"

प्रोफेसर दयानन्दो आ प्रोफेसर कमलनाथोक आगमनसँ देवनाथो आ मंगलोक मनमे चारि-बर उत्साह बढ़ि गेल। दुनूक मनमे जेना नव खुशी भेल,

जइसँ शरीरमे नव शक्तिक संचार हुअ लगलैन।

प्रोफेसर कमलनाथ एक-साए-एक्कैस रूपैआ चन्दा देलखिन। दुनू गोरेकेँ आग्रह करैत मंगल कहलकैन-

“गुरुदेव, आब अपने सभ केतए जाएब। रहिए जाइऔ। कियो औता अहाँ सभ आएले छी।”

मंगलक बात सुनि प्रोफेसर कमलनाथ बजला-

“बौआ, अखन धरि तूँ सभ नइ चिन्है छेलह। जहन कि एक अरिया-पटिया छी। महिनामे कमसँ कम पाँच बेर ऐ गाम होइत अबै-जाइ छी। औझुका संयोग नीक रहल जे सभसँ भेँट भेल। सिरिफ भेँटे नै चिन्हा-परिचए सेहो भऽ गेल। सभ एक्के अरिया-पटिया छी तँए एकठाम बैस सभ गामक उत्थान-ले विचार-विमर्श कऽ आगू बढ़ैत रहब। ओना तँ हम बुढ़ भेलौं मुदा तैयो दौनक मेहौता बरद जकाँ जाधैर जीबै छी ताधैर संग-साथ दैत रहबह। गामकेँ आगू बढ़बैले दू तरहक काज करैक जरूरत अछि। पहिल, मनुखकेँ जीबैले मूल आवश्यकता की-की अछि ओ बुझि ओकर पूर्ति करैक आ दोसर पाछूसँ अबैत क्रिया-कलापकेँ ढंगसँ देख अधलाकेँ छोड़ि नीकक अनुशरण करैक। अखन तहूँ सभ नमहर काजमे लगल छह ओकरा नीक-नहाँति सम्हारि लएह तेकर पछाइत बूझल जेतइ।”

कहि कमलनाथ दयानन्दक संग किछु बगैल कऽ गप-सप्प करए लगला। कमलनाथकेँ दयानन्द पुछलखिन-

“अपनेकेँ बड़ हलचल देखलौं। किछु खास बात छै, की?”

मुस्कियाइत कमलनाथ कहलखिन-

“खास बात तँ अहीं कहब। करीब साढ़े नअ बजे भातिज आबि कऽ कहलक जे दयाबाबूक गाममे बैसार छेलैन जइमे किछु गोरे हुनका गरियेबो केलकैन आ मारबो केलकैन। से कहाँ धरि की बात छिऐ?”

कमल बाबूक बात सुनि दयानन्द अवाक् भऽ गेला। मने-मन सोचए लगला जे बैसारमे तँ कियो आन गामक नै छल, तहन केना बात उड़ियाएल। फेर भेलैन जे इलाकाक सभ गाम एक-दोसरसँ जुड़ल अछि। कर-कुटुमैतीसँ

लऽ कऽ आबा-जाही, हाट-बजार धरिक सम्बन्ध रहैए। परिवारक काज ने साधारण ढंगसँ चलै छै मुदा समाजिक काज तँ बिर्ड़ो जकाँ उड़ैत चलैए। भरिसक सएह भेल।

फेर मनमे उठलैन, जँ किछु अधला बात उड़बे कएल तँ ओइ संग घटनो उड़ल हएत। जखने घटना उड़ल हएत तखने विरोध स्वरूप चरचा भेल हएत। से तँ अधला नै भेल। ओ तँ नीके भेल। अन्यायक विरोध करब तँ धर्मक रक्षा करब छी। जहिना अन्यायक विरोध केलासँ रामायणिक बालिमे दोबर शक्तिक संचार भऽ जाइ छल तहिना तँ भरिसक ईहो भेल। अन्यायिक बीच जरूर दहसैत बढ़ल हएत। ई तँ जिनगी-ले पैघ उपलब्धि छी। मुस्की दैत दुर्गा-पूजाक घटल घटनाकेँ दोहरबैत प्रो. दयानन्द बजला-

“सभ गाममे दस-बीसटा लुच्चा-लम्पट रहिते अछि। जे सदिकाल किछु-ने-किछु उकठ-पाकठ समाजमे करिते रहैए, ताड़ी-दारू पीब अनेरे केकरो गरियबैत रहैए। माए-बहिनकेँ देख पीहकारी भरैत रहैए। तेतबे नहि, झूठ-फूस सिखा लकठी सेहो लगबैत रहैए। ओहन-ओहन वृत्ति केनिहारक वृत्तिकेँ रोकब समाजक दायित्व बनि जाइए किने। हमहूँ सएह केलौं।

जँ दुर्गा-पूजामे रामेश्वरम् नै गेल रहितौं तँ एहेन घटना थोड़े गाममे होइत। जइ गाममे हजारो बर्खसँ अनेको पीढ़ी-खुशीसँ रहैत आएल अछि ओइ गाममे एहेन-एहेन घटना भेने समाजमे आगि लगत आकि शान्ति रहत। जाधैर समाज शान्तिसँ नै रहत ताधैर आगू-मुहेँ ससैर केना सकैए। यएह सभ सोचि गाममे बैसार केलौं। बैसारेमे किछु चक-चुक भऽ गेलइ। समाजोकेँ धैनवाद दी जे गलत काजक विरोधमे एकजुट भऽ ठाढ़ भेल। मुदा गलतियो केनिहार तँ बेवस्थेक फूल-फड़ छी, तँए ओहो कमजोर नहियेँ अछि।”

प्रोफेसर दयानन्दक बात सुनि प्रोफेसर कमलनाथ बजला-

“देखियौ, कोनो स्थानपर पहुँचैले रस्तो अनेक आ सवारियो अनेक तरहक होइ छै, मुदा चलनिहार जँ यएह सोचैत रहि जाए जे ई नीक कि उ,

तहन ओ पहुँच केना सकैए?

अपना इलाकाक दुर्भाग्य रहल अछि जे विचारक क्षेत्रमे पैघ-पैघ विचार कऽ लइ छी मुदा कर्मक बेरमे शिथिल भऽ जाइ छी। कोनो विचार ताधैर महत्तक नै बनत जाधैर कर्मरूपमे नै औत। कहैले तँ सभ कियो अपना बच्चाकेँ सिखबै छैथ जे बौआ अधला काज नै करिहेँ, मुदा केला पछाइत गबदी मारि दइ छैथ। ऐसँ केना अधला काज मेटाएत। खएर जे किछु मुदा अहाँक प्रसन्नतासँ हमहूँ प्रसन्न छी। आगूक बात हेतइ। चलू।"

◌

शब्द संख्या : 6539

क्रमशः जारी......।